कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Postal R.No.MP/BPL/525/2025-27 RNI No. Raj HIN/2000/3239, डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 जयपुर, प्रकाशन - सोमवार, 15 सितम्बर 2025 वर्ष-25 अंक-51 मूल्य-12/- कुल पृष्ठ-12 www.krishakjagat.org पृष्ठ-1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

पढ़िये...

5

सरसों की उन्नत खेती

7

मृदा सुधार का आधार व किसानों का मित्र केंचुआ खाद

राजस्थान मसाला कॉन्क्लेव-2025

राज्य में मसाला प्रसंस्करण उद्योग की अपार संभावनाएं : श्री भजनलाल

मुख्यमंत्री ने कृषि विपणन से संबंधित विभिन्न विकास कार्यों का किया शिलान्यास-लोकार्पण

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान मसालों के उत्पादन और व्यापार का प्रमुख केंद्र होने के साथ ही मसालों की समृद्ध परंपरा के लिए विश्व विख्यात है। उन्होंने कहा कि राज्य में मसाला कॉन्क्लेव का आयोजन हमारे मसाला उद्योग को नई दिशा व गति प्रदान करेगा। श्री शर्मा ने कार्यक्रम में घोषणा करते हुए कहा कि प्रदेश में अब हर वर्ष मसाला कॉन्क्लेव आयोजित किया जाएगा। साथ ही, इस संबंध में समिति का गठन भी किया जाएगा, जिससे राज्य के मसाला उत्पादकों एवं व्यापारियों को नई संभावनाओं और नए अवसरों का सृजन करने के लिए एक वैश्विक मंच मिल सके। श्री शर्मा जयपुर के बिड़ला सभागार में आयोजित राजस्थान मसाला कॉन्क्लेव-2025 में उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य में मसाला प्रसंस्करण उद्योग की अपार संभावनाएं है। राजस्थान जीरा उत्पादन में देश में पहले, मैथी एवं सौंफ उत्पादन में दूसरे और धनिया एवं अजवाइन उत्पादन में तीसरे स्थान पर है।

- राजस्थान मसालों के लिए विश्व विख्यात
- अब हर वर्ष आयोजित होगा मसाला कॉन्क्लेव

प्रधानमंत्री के वोकल फॉर लोकल से मसाला उद्योग को मिली मजबूती- मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के वोकल फोर लोकल की अवधारणा मसाला उद्योग के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र एवं राज्य की डबल इंजन सरकार विपणन व्यवस्था को मजबूत बनाने और कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण से किसानों की आय दोगुनी करने हेतु विभिन्न योजनाएं संचालित कर रही हैं।

अगले साल होगा ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट- राइजिंग राजस्थान समिट से कृषि प्रसंस्करण के क्षेत्र में राज्य में करीब 44 हजार करोड़ रुपये का निवेश होना प्रस्तावित हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में कृषि प्रसंस्करण एवं आधुनिक तकनीक को बढ़ावा देने और निवेशकों के प्रोत्साहन हेतु अगले साल की शुरुआत में ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट का आयोजन किया जाएगा।

कृषि प्रसंस्करण और विपणन प्रोत्साहन हमारी प्राथमिकता- मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के प्रसंस्करणकर्ताओं को एक ही स्थान पर प्रसंस्करण से संबंधित सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए राज्य के विभिन्न जिलों के 39 स्थानों पर फूड पार्क स्थापित किए जा रहे हैं। साथ ही, मंडी यार्ड में विकास कार्य और किसानों को मंडी यार्डों तक अपनी उपज लाने की सुविधा के लिए संपर्क सड़कों का निर्माण भी करवाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 148 लाख पात्र फसल बीमा पॉलिसी धारक किसानों को 3 हजार 912 करोड़ रुपये का फसल बीमा क्लेम का भुगतान किया गया है तथा खरीफ 2025 में करीब 163 लाख फसल बीमा पॉलिसी सृजित हो चुकी है।

कृषि मंत्री श्री किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार किसानों के कल्याण के लिए कृतसंकल्पित होकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार किसानों को खाद, बीज देने में कोई कमी नहीं छोड़ेगी।

इस अवसर पर सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम कुमार दक, शासन सचिव कृषि श्री राजन विशाल सहित बड़ी संख्या में कृषक, मसाला व्यापारी, कृषि विशेषज्ञ भी मौजूद थे।

अफीम की खेती के लिए नई लाइसेंस नीति घोषित

15 हजार नए किसान होंगे शामिल

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्र सरकार ने मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए अफीम पोस्त की खेती से जुड़ी वार्षिक लाइसेंसिंग नीति की घोषणा की है। यह नीति 1 अक्टूबर 2025 से 30 सितंबर 2026 तक के फसल वर्ष के लिए लागू होगी।

मुख्य बातें:

- इस नीति के तहत 1.21 लाख किसान लाइसेंस के पात्र होंगे।
- यह पिछले साल की तुलना में 23.5 प्रतिशत ज्यादा है - यानी 15,000 नए किसान अब अफीम की खेती कर सकेंगे।
- सरकार का उद्देश्य चिकित्सा जरूरतों के लिए जरूरी एल्कलॉइड की आपूर्ति को सुनिश्चित करना है।

लाइसेंस देने की शर्तें

- जो किसान 4.2 किग्रा/हेक्टेयर या उससे अधिक मॉर्फिन उपज (एमक्यूवाई) दे रहे हैं, उन्हें

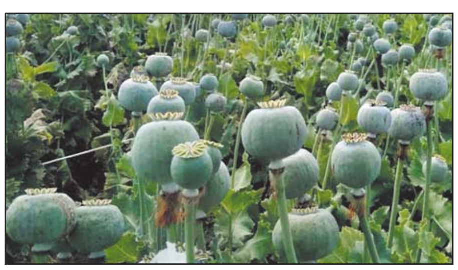

अफीम गोंद उत्पादन की अनुमति जारी रहेगी।

- जिनकी उपज 3.0 से 4.2 किग्रा/हे. के बीच है, वे अब चीरा लगाए बिना पोस्ता भूसे से एल्कलॉइड निकालने की विधि (CPS) से खेती कर सकेंगे, वह भी 5 साल के लाइसेंस के साथ।
- जिन किसानों ने पिछले साल 800 किग्रा/हेक्टेयर से कम उपज दी थी, उनके CPS लाइसेंस निलंबित किए जाएंगे।
- 900 किग्रा/हेक्टेयर या अधिक उपज देने वाले बेहतर किसानों को फिर से पारंपरिक अफीम गोंद उत्पादन की अनुमति दी जाएगी, जिससे उनकी आमदनी बढ़ सके।

प्रदेश सरकार किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपज खरीदने को प्रतिबद्ध : सहकारिता मंत्री

जयपुर। सहकारिता मंत्री श्री गौतम कुमार ने विधानसभा में कहा कि प्रदेश सरकार किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर उपज खरीदने को प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा इसके लिए स्थानीय मांग के अनुसार एमएसपी खरीद केंद्र खोले जाते हैं तथा काश्तकारों को समय पर भुगतान के लिए प्रयास किए जाते है।

श्री कुमार प्रश्नकाल के दौरान सदस्य द्वारा इस संबंध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि एमएसपी पर उपज की खरीद मांग के आधार पर की जाती है। काश्तकार को परेशानी न हो, इसके लिए विभागीय कार्यालयों द्वारा तारीख दी जाती है जिससे वे अपनी उपज को खरीद केंद्रों पर लाकर एमएसपी पर बेच सकते है। इसके लिए विभाग के जिला कार्यालयों द्वारा प्रचार-प्रसार भी किया जाता है। उन्होंने जानकारी दी कि सरकार द्वारा वर्ष 2024-25 में मूंगफली और मूंग की खरीद निर्धारित लक्ष्यों से ज्यादा की गई।

इससे पहले विधायक श्री रामकेश के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में सहकारिता मंत्री ने कहा कि सवाईमाधोपुर जिले में राजफैड द्वारा रबी 2025-26 में क्रय विक्रय सहकारी समितियों के माध्यम से सरसों की 1034.50 क्वि. व चने की 8166 क्वि. खरीद एमएसपी योजनान्तर्गत की गई। उन्होंने कहा कि प्रदेश में रबी 2025-26 में भारत सरकार द्वारा सरसों के लिए 1322360 मी. टन व चने के लिए 546255 मी. टन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इन लक्ष्यों के विरुद्ध राजफैड द्वारा प्रदेश में रबी 2025-26 के लिए सरसों की 70107.35 मी. टन व चने की 54336.04 मी. टन खरीद की गई है। उन्होंने जानकारी दी कि रबी 2025-26 में बाजार भाव समर्थन मूल्य की दर से अधिक होने के कारण किसानों द्वारा एमएसपी योजनान्तर्गत जिन्स विक्रय नहीं की गई है।

श्री राधाकृष्णन देश के 15वें उपराष्ट्रपति बने

नई दिल्ली (कृषक जगत)। श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने भारत के पंद्रहवें उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति के रूप में शपथ ली। राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में, राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने श्री सी.पी. राधाकृष्णन को शपथ दिलाई। श्री राधाकृष्णन इससे पहले महाराष्ट्र के राज्यपाल थे।

परिचय

शैक्षिक एवं पेशेवर पृष्ठभूमि

4 मई 1957 को तमिलनाडु के तिरुपुर में जन्मे, श्री चंद्रपुरम पोन्नुसामी राधाकृष्णन ने बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आरएसएस के स्वयंसेवक के रूप में शुरुआत करके, वे 1974 में भारतीय जनसंघ की राज्य कार्यकारिणी के सदस्य बने।

संसदीय एवं सार्वजनिक जीवन

वर्ष 1996 में, श्री सी.पी. राधाकृष्णन को तमिलनाडु भाजपा का सचिव नियुक्त किया गया। वे 1998 में कोयंबटूर से पहली बार लोकसभा के लिए चुने गए और 1999 में पुन: निर्वाचित हुए।

वर्ष 2004 से 2007 के बीच, श्री राधाकृष्णन तमिलनाडु भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रहे। इस पद पर कार्य करते हुए, उन्होंने 'रथ यात्रा' की, जो 93 दिनों तक चली। वर्ष 2016 में, श्री राधाकृष्णन को कोच्चि स्थित कॉयर बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वे चार वर्षों तक इस पद पर रहे।

18 फरवरी 2023 को, श्री राधाकृष्णन को झारखंड का राज्यपाल नियुक्त किया गया। अपने कार्यकाल के पहले चार महीनों में, उन्होंने राज्य के सभी 24 जिलों का दौरा किया। उन्होंने तेलंगाना के राज्यपाल और पुडुचेरी के उपराज्यपाल का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाला।

श्री राधाकृष्णन ने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, नॉर्वे, डेनमार्क, स्वीडन, फिनलैंड, बेल्जियम, हॉलैंड, तुर्की, चीन, मलेशिया, सिंगापुर, ताइवान, थाईलैंड, मिस्र, संयुक्त अरब अमीरात, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, जापान की यात्रा की है।

व्यक्तिगत विवरण

नाम	: श्री चंद्रपुरम पोन्नुसामी राधाकृष्णन
पिता	: श्री पोन्नुसामी
माता	: श्रीमती सी.पी. जानकी
जन्म तिथि	: 4 मई 1957
जन्म स्थान	: तिरुपुर, तमिलनाडु
वैवाहिक स्थिति	: 25 नवंबर 1985
पत्नी	: श्रीमती सुमति आर.
बच्चे	: एक बेटा और एक बेटी

भारत में बायोस्टिमुलेंट्स की अस्थायी पंजीकरण व्यवस्था खत्म

अब सिर्फ 146 उत्पाद मान्य, 9,352 रद्द

(निमिष गंगराडे)

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत सरकार ने बायोस्टिमुलेंट्स को लेकर बड़ा कदम उठाया है। अब तक चल रही अस्थायी पंजीकरण व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। इस फैसले के बाद केवल 146 उत्पाद ही फर्टिलाइज़र कंट्रोल ऑर्डर (FCO), 1985 के तहत स्वीकृत रहेंगे, जबकि 9,352 उत्पादों का पंजीकरण रद्द कर दिया गया है।

नियम कब और कैसे शुरू हुए

कई वर्षों तक भारत में लगभग 30,000 बायोस्टिमुलेंट उत्पाद बिना किसी स्पष्ट नियामक ढाँचे के बाजार में उपलब्ध थे। इस अव्यवस्था को रोकने के लिए केंद्र सरकार ने 23 फरवरी 2021 को नोटिफिकेशन S.O. 882(E) जारी कर FCO में नया क्लॉज़ 20C जोड़ा। इसके जरिए बायोस्टिमुलेंट्स की गुणवत्ता और सुरक्षा मानक तय किए गए।

नौ श्रेणियों में वर्गीकृत

वनस्पति अर्क, जैव-रासायनिक उत्पाद, प्रोटीन हाइड्रोलायट, विटामिन, सूक्ष्मजीव उत्पाद, एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-ट्रांसपाइरेंट्स, ह्यूमिक और फुल्विक एसिड तथा जीवित सूक्ष्मजीव (बायोफर्टिलाइज़र और बायोपेस्टिसाइड्स को छोड़कर)।

अस्थायी पंजीकरण की व्यवस्था

कंपनियों को उत्पादों की प्रभावकारिता, रसायन विज्ञान और विषाक्तता से जुड़ा डेटा जुटाने के लिए समय देने हेतु सरकार ने अस्थायी पंजीकरण (G3 सर्टिफिकेट) की सुविधा दी।

● **23 फरवरी 2021 :** बायोस्टिमुलेंट्स FCO में शामिल। ● **23 फरवरी 2023:** अस्थायी पंजीकरण की पहली अवधि समाप्त। ● **फरवरी 2024 और 2025:** दो बार विस्तार दिया गया। ● **16 जून 2025:** अंतिम विस्तार।

मौजूदा स्थिति

कृषि मंत्रालय ने स्पष्ट कर दिया है कि 16 जून 2025 के बाद किसी भी उत्पाद को और विस्तार नहीं मिलेगा। 17 जून 2025 से सभी 9,352 अस्थायी पंजीकरण रद्द कर दिए गए। सितम्बर 2025 तक केवल 146 बायोस्टिमुलेंट उत्पाद ही पूरी तरह से FCO, 1985 की अनुसूची VI में सूचीबद्ध और स्वीकृत हैं। (प्रतिबंधित उत्पादों की पूरी सूची देखने के लिए ग्लोबल-एग्रीकल्चर वेबसाइट के लिंक पर जाएं https://www.global-agriculture.com/wp-content/uploads/2025/09/Biostimulant-Product-Banner.pdf

किसानों और कंपनियों पर असर

विशेषज्ञों का कहना है कि इस फैसले से किसानों को भरोसेमंद और प्रमाणित उत्पाद मिलेंगे, जिससे उनकी लागत का सही उपयोग होगा और फसल की गुणवत्ता पर सकारात्मक असर पड़ेगा। वहीं, कंपनियों के लिए यह बड़ा झटका है क्योंकि हजारों उत्पाद बाजार से बाहर हो गए हैं। अब केवल वही कंपनियाँ आगे बढ़ पाएँगी, जिनके पास वैज्ञानिक डेटा और प्रमाणित गुणवत्ता वाले उत्पाद हैं।

विशेषज्ञ टिप्पणी

कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम लंबे समय में भारतीय कृषि के लिए सकारात्मक साबित होगा। एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा, 'पहले बाजार में कई बायोस्टिमुलेंट बिना परीक्षण और प्रमाणन के बिक रहे थे। अब केवल वही उत्पाद किसान तक पहुँचेंगे जो वैज्ञानिक मानकों पर खरे उतरते हैं।

छोटे किसानों को ध्यान में रखकर रणनीति बनाना जरूरी : डॉ. जाट

'डायलॉगनेक्स्ट' सम्मेलन में हुआ वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर मंथन

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के कन्वेंशन सेंटर में दो दिवसीय 'डायलॉगनेक्स्ट' सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्देश्य वैश्विक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृषि नवाचारों को बढ़ावा देना और किसान-केन्द्रित समाधान तलाशना रहा।

इस सम्मेलन का आयोजन वर्ल्ड फूड प्राइज़ फाउंडेशन द्वारा, सीआईएमएमआईटी, बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (BIS) और आईसीएआर के साथ साझेदारी में किया गया।

इस वर्ष की थीम थी- 'इसे किसान तक ले चलो' जो किसानों तक प्रभावशाली और व्यवहारिक तकनीकों को पहुँचाने पर केंद्रित रही।

नवाचारों को गति और किसानों को लाभ

आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट ने कहा कि वैश्विक कृषि चुनौतियों के समाधान के लिए छोटे किसानों को केंद्र में रखते हुए प्रभावी और तेज क्रियान्वयन योग्य रणनीतियाँ जरूरी हैं। भारत, कृषि नवाचारों का एक वैश्विक केंद्र बन सकता है। वर्ल्ड फूड प्राइज़ फाउंडेशन के वरिष्ठ निदेशक श्री निकोल प्रेंगर ने कहा कि भारत में इस सम्मेलन का आयोजन, डॉ. नॉर्मन बोरलॉग की विरासत को सम्मानित करने जैसा है, जिन्होंने भारत में हरित क्रांति लाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

अंतरराष्ट्रीय सहभागिता

सम्मेलन में भूटान, नेपाल, संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका सहित कई देशों के वरिष्ठ कृषि अधिकारी, नीति निर्माता और वैज्ञानिक शामिल हुए। अमेरिकी राज्य लोवा से आई प्रतिनिधिमंडल में गवर्नर किम रेनॉल्ड्स, कृषि सचिव माइक नाइग और लोवा फार्म ब्यूरो अध्यक्ष ब्रेंट जॉनसन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

चर्चा के प्रमुख विषय

सम्मेलन के दौरान किसान-केन्द्रित नवाचार, लघु उत्पादक फसलें, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, पोषण और खाद्य प्रणालियां, मूल्य श्रृंखलाएं और नई पीढ़ी की कृषि प्रौद्योगिकियां जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया गया।

डायलॉगनेक्स्ट सम्मेलन ने यह स्पष्ट किया कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा की कुंजी स्थानीय स्तर पर प्रभावी नवाचारों को किसानों तक पहुंचाने में भारत वैश्विक नेतृत्वकर्ता बनकर उभर सकता है।

डॉ. पद्मजा को 'इंस्पायरिंग द नेक्स्ट जेनरेशन अवॉर्ड'

इंटरनेशनल क्रॉप्स रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर द सेमी-एरिड ट्रॉपिक्स (ICRISAT) की प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. पद्मजा रवुला को वर्ल्ड फूड प्राइज फाउंडेशन द्वारा 'इंस्पायरिंग द नेक्स्ट जेनरेशन अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है।

यह सम्मान उन्हें नई दिल्ली में आयोजित Dialogue Next India कार्यक्रम में वर्ल्ड फूड प्राइज फाउंडेशन की ओर से जूली बोलॉग (महान कृषि वैज्ञानिक डॉ. नॉर्मन बोलॉग की पोती) ने प्रदान किया। डॉ. पद्मजा, समाजशास्त्री के रूप में प्रशिक्षित हैं और ICRISAT में जेंडर एंड यूथ प्रोग्राम का नेतृत्व कर रही हैं।

अर्बन-को ऑपरेटिव बैंक का राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित

शहरी सहकारी बैंक अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को लाभ पहुंचाने का कार्य करें : राज्यपाल

जयपुर। राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने कहा कि सहकारिता क्षेत्र के शहरी बैंक समाज को आर्थिक रूप से सशक्त करने को अपना ध्येय बनाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश के व्यवसायी देशभर में आर्थिक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। आर्थिक रूप से सुदृढ़ सभी लोग सहकारिता से जुड़े। इसी से राष्ट्र और प्रदेश के विकास में तेजी आएगी। उन्होंने शहरी सहकारी बैंकों के जरिए अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को लाभान्वित किए जाने पर भी विशेष रूप से जोर दिया। उन्होंने कहा कि गरीब, जरूरतमंद को मुख्य धारा में लाने के उद्देश्य से सहकारी बैंक कार्य करेंगे तभी सही मायने में सबका साथ सबका विकास को हम साकार कर पायेंगे।

राज्यपाल श्री बागडे बिड़ला ऑडिटोरियम में सहकार भारती एवं सहकारिता विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक के राष्ट्रीय अधिवेशन में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कॉपरेटिव बैंक न केवल हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि यह लाखों लोगों को, उनके परिवारों के लिए आजीविका का एक मजबूत स्रोत भी है।

राज्यपाल ने कहा कि सहकार में अपने लिए नहीं सबके विकास की सोच होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि डेनमार्क में सहकारिता से कृषि और डेयरी का जो विकास हुआ है, वह प्रेरित करने वाला है।

राज्यपाल ने कहा कि सहकारिता से सभी का समान आर्थिक विकास, रोजगार जनन और सामूहिक विकास संभव है। उन्होंने राजस्थान में अधिकाधिक सहकारी बैंक स्थापित किए जाने पर जोर दिया। उन्होंने राजस्थान में सरस की सहकारी गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि डेयरी के साथ अन्य उत्पादों का भी सहकारिता की सोच से प्रभावी विपणन किए जाने का आह्वान किया। उन्होंने सहकारिता में भारत के तेजी से आगे बढ़ने की चर्चा करते हुए कहा कि दुग्ध उत्पादन में विश्वभर में हमारा देश पहले स्थान पर है। सहकारिता को प्रभावी गति देने से इस क्षेत्र के माध्यम से हम सर्वांगीण विकास की ओर तेजी से आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने सहकारिता के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि हमारे यहाँ सबसे पहले सयाजीराव गायकवाड़ जी ने बड़ोदा में एक अर्ध-सहकारी कारखाना स्थापित किया था। इसके बाद विखे पाटिल और धनंजयराव गाडगिळ ने 1949 में प्रवरा सहकारी चीनी कारखाना की स्थापना की।

कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की योजनाओं का लाभ कृषकों को पहुंचाएं : श्री विशाल

जयपुर। शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी श्री राजन विशाल ने विभागीय योजनाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि बजट घोषणाओं को समय से पूरा करते हुए योजनाओं का लाभ ज्यादा से ज्यादा पात्र किसानों को दिया जाए, जिससे प्रदेश के किसाना आर्थिक रूप से समृद्ध और खुशहाल बन सकें।

श्री राजन विशाल पंत कृषि भवन के सभा कक्ष में कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की योजनाओं की प्रगति के संबंध में विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। शासन सचिव ने कहा कि बजट घोषणाओं को ध्यान में रखते हुए इन्हें जल्द से जल्द शत्-प्रतिशत पूरा करें। अधिकारी फील्ड में जाकर ज्यादा से ज्यादा किसानों को योजनाओं की जानकारी दें, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के किसानों को राज्य सरकार की जन- कल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल सके।

शासन सचिव ने कहा कि विभागीय अधिकारी कस्टम हायरिंग सेंटरों का लगातार निरीक्षण कर यह सुनिश्चित करें कि इन केंद्रों से कृषि यंत्र जरूरतमंद किसानों को समय पर दिये जा रहे हैं। साथ ही कस्टम हायरिंग सेंटरों को किसानों के लिए ज्यादा से ज्यादा उपयोगी बनाने के लिए कहा।

उन्होंने बैठक में फार्म पौंड, डिग्गी, सिंचाई पाइप लाईन, कृषि यंत्र, तारबंदी, गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना, सोलर पंप , पॉली हाउस, ड्रिप, मिनी स्प्रिंकलर, फल-बगीचों, हरियालो राजस्थान, मिशन कर्मयोगी और ई-फाइल सहित विभिन्न गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा की।

श्री विशाल ने कहा कि रबी फसल के लिए यूरिया व डीएपी का स्टॉक पर्याप्त मात्रा में रखा जाये। उर्वरकों का वितरण पूर्ण पारदर्शिता के साथ किया जाये एवं टैगिंग करने वाले उर्वरक विक्रेताओं व विनिर्माताओं का ध्यान रखें।

बैठक में आयुक्त कृषि एवं उद्यानिकी सुश्री चिन्मयी गोपाल, वित्तीय सलाहकार कृषि श्री अचलेश्वर मीणा, निदेशक आत्मा डॉ. सुवालाल जाट, अतिरिक्त निदेशक कृषि (विस्तार) श्री एस.एस. शेखावत, अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) डॉ. हुशियार सिंह, अतिरिक्त निदेशक (उद्यान) श्री हिरेंद्र कुमार शर्मा, अतिरिक्त निदेशक कृषि (आदान) श्री गोपाल लाल, अतिरिक्त निदेशक कृषि (अनुसंधान) श्री अजय कुमार पचौरी सहित कृषि एवं उद्यानिकी विभाग के विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

मिलेट आउटलेट्स खोलने की दिशा में सहकारिता विभाग की अहम उपलब्धि

आमजन में लोकप्रिय हो रहे मिलेट आउटलेट्स

जयपुर। राज्य में सहकारी संस्थाओं द्वारा मिलेट आउटलेट्स खोलने की दिशा में सहकारिता विभाग अहम उपलब्धियां हासिल कर रहा है। राज्य में अब तक 152 मिलेट आउटलेट्स खोले जा चुके हैं जो निर्धारित लक्ष्य की तुलना में लगभग साढ़े चार गुना अधिक हैं। ग्राम सेवा सहकारी समिति स्तर तक खोले जा रहे ये मिलेट आउटलेट्स आमजन के बीच खास लोकप्रिय हो रहे हैं और बड़ी संख्या में लोग श्री अन्न को अपना रहे हैं।

सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां श्रीमती मंजू राजपाल ने बताया कि सितम्बर माह के अंत तक कॉनफेड एवं जिला सहकारी उपभोक्ता भण्डारों के माध्यम से 34 मिलेट आउटलेट्स खोलने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, लेकिन सहकारी समितियों की दिलचस्पी और आमजन के रूझान के चलते आदिनांक तक ही 152 मिलेट आउटलेट्स खोले जा चुके हैं। कॉनफेड और जिला सहकारी उपभोक्ता भण्डारों के साथ ही क्रय-विक्रय सहकारी समितियों एवं ग्राम सेवा सहकारी समितियों के स्तर पर तेजी से मिलेट आउटलेट्स खोले जा रहे हैं। श्रीमती राजपाल ने बताया कि राज्य सरकार की बजट घोषणा की अनुपालना में श्री अन्न उत्पादों की आमजन तक पहुंच बढ़ाने, प्रचलन में लाने तथा सहकारिता एवं राजीविका के स्वयं सहायता समूहों के मिलेट उत्पादों की बिक्री से रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए राज्य भर में ये मिलेट आउटलेट्स खोले जा रहे हैं। विगत 17 जुलाई को केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा सहकार एवं रोजगार उत्सव के दौरान 64 मिलेट आउटलेट्स का शुभारम्भ किया गया था।

प्रमुख शासन सचिव ने बताया कि इन आउटलेट्स पर आमजन को श्री अन्न तथा श्री अन्न से बने उत्पाद उचित दामों पर उपलब्ध हो रहे हैं। सहकारी संस्थाओं के साथ-साथ राजीविका की महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित मिलेट्स उत्पादों को भी इन मिलेट विक्रय केन्द्रों पर बिक्री हेतु रखा जा रहा है। मिलेट आउटलेट्स पर उपलब्ध उत्पादों में सावां, कुटकी, कोदो, कांगनी और छोटी कांगनी के साथ ही मिलेट मिक्स, रोस्टेड ज्वार, रोस्टेड बाजरा, रागी के बिस्किट, ओट्स बिस्किट, कुकीज, श्री अन्न का दलिया, रागी के फ्लेक्स, सावां के रोस्टेड फ्लेक्स आदि प्रमुख है। उन्होंने बताया कि 'सहकार से समृद्धि' परिकल्पना के अंतर्गत राज्य का यह नवाचार निरन्तर सफलता की ओर अग्रसर है और इससे सहकारी समितियों की आय में वृद्धि हो रही है।

कॉनफेड के मैनेजर (मार्केटिंग) श्री हनुमान अग्रवाल ने बताया कि नेहरू सहकार भवन स्थित कॉनफेड स्टोर में संचालित मिलेट आउटलेट में विगत दिनों में बिक्री में जबर्दस्त वृद्धि हुई है। यहां प्रतिमाह लगभग 1.50 लाख रुपये के उत्पादों की बिक्री हो रही है। स्टोर पर श्री अन्न उत्पाद बिक्री के लिए रखे जाने के बाद से खरीददारों की आवाजाही बढ़ी है। उन्होंने बताया कि श्री अन्न से बने उत्पाद यथा- मिलेट्स बिस्किट, मिलेट्स की रोस्टेड नमकीन, मिलेट्स से बने नूडल्स और पोहा आदि की विशेष मांग है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोग श्री अन्न के उत्पादों को अपनी थाली में शामिल कर रहे हैं।

श्रीगंगानगर सहकारी उपभोक्ता होलसेल भण्डार लि. के सुपर बाजार प्रभारी श्री अभितेष मिगलानी ने बताया कि मिलेट आउटलेट की शुरूआत से ही लोगों का श्री अन्न उत्पादों के प्रति अच्छा रूझाने देखने को मिल रहा है और उत्पादों की बिक्री में निरन्तर वृद्धि हो रही है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में एक आउटलेट से औसतन 10 हजार रुपये प्रतिमाह की बिक्री हो रही है। विशेष रूप से रोस्टेड उत्पाद जैसे रोस्टेड ज्वार, रोस्टेड बाजरा, रोस्टेड रागी आदि पसंद किए जा रहे हैं। साथ ही, कुकीज और मल्टी ग्रेन आटे की भी अच्छी डिमांड है। उन्होंने कहा कि आगामी दिनों में लोगों की डिमांड के अनुसार प्रोडक्ट्स बढ़ाए जाएंगे।

अलवर जिले की रामगढ़ आदर्श ग्राम सेवा सहकारी समिति के व्यवस्थापक श्री अंशुल चौधरी ने बताया कि समिति द्वारा लगभग दो माह पूर्व मिलेट आउटलेट्स की शुरूआत की गई थी और अब तक लगभग 30 हजार रुपये के उत्पादों की बिक्री हो चुकी है। उन्होंने बताया कि पहले लोगों को श्री अन्न के उत्पाद खरीदने अलवर जाना पड़ता था, लेकिन अब समिति के आउटलेट पर ही उपलब्ध हो रहे हैं। सहकारिता से जुड़े होने के कारण लोग इन उत्पादों की शुद्धता पर भी विश्वास कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि समिति कार्यालय में जो भी लोग आते हैं, उन्हें इन उत्पादों के फायदों के बारे में जानकारी दी जाती है, जिससे वे श्री अन्न अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। नवाचार के रूप में श्री अन्न आउटलेट की शुरूआत होने से समिति की आय में भी वृद्धि हो रही है।

कुम्हेर क्रय-विक्रय सहकारी समिति के कर्मचारी श्री नाहर सिंह ने बताया कि पिछले महीने ही समिति द्वारा मिलेट आउटलेट प्रारम्भ किया गया है। जैसे-जैसे लोगों को इसके बारे में पता लग रहा है, वे यहां खरीददारी के लिए आ रहे हैं। लोग मिलेट मिक्स आटे के साथ ही साबूत श्री अन्न की ज्यादा खरीददारी कर रहे हैं।

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सज्जन से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती।
- महाकवि कालिदास

किसानों के लिए लाभकारी औषधीय फसलों की खेती

रोगों के उपचार के लिये औषधि पौधों के उपयोग का इतिहास सदियों से पुराना रहा है। पौधों के औषधि गुण-दोषों का तकनीकी हस्तांतरण गुरू-शिष्य परम्परा अनुसार होता था। श्रुति परम्परा में गुरू द्वारा दिया गया मौखिक ज्ञान शिष्यों को याद रखना होता था तथा अगली पीढ़ी को उनके बारे में अवगत कराना होता था। हमारे वेदों से लेकर रामायण तथा महाभारत तक तत्कालीन लेखों में औषधीय पौधों के तत्वों तथा उनके उपयोग विभिन्न रोगों के लिये करने की विधियां अंकित थीं। आज से 3000 वर्ष पूर्व चरक, सुश्रुत ने अपने ग्रंथों में औषधि पौधों का महत्व तथा उनकी उपयोगिता विधि पर विस्तार से जानकारी दी। रामायण में जब लक्ष्मण को मेघनाथ द्वारा शक्ति के उपयोग से मुर्छित किया गया तब लंका के अनुभवी राजवैद्य श्री सुषेण द्वारा हिमालय पर्वत पर पैदा होने वाली औषधि संजीवनी पौध का उल्लेख आज भी प्रासंगिक है। औषधि पौधों से प्राप्त तत्वों का उपयोग वर्तमान में केवल आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विश्व में करीब 75 से लेकर 80 प्रकार के औषधि पौधों के तत्वों का उपयोग एलोपेथी में भी किया जा रहा है। भारत

की लगभग 140 करोड़ की आबादी में लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी रूप में आयुर्वेदिक दवाइयों का उपयोग करती है। भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग 8000 पौध प्रजातियों का उपयोग औषधियों के रूप में किया जाता है। इन औषधि पौधों में प्रमुख है चिरायता, सदाबहार, अश्वगंधा, रजनीगंधा, कोंच, कलिहार, सतावर, सनाय, लावची, ग्वारपाठा तथा बैलाडोना इत्यादि। वर्तमान में एलोवेरा भी औषधियों के तत्काल प्रभाव का सभी लोगों पर है परंतु उन दवाओं का असर शरीर पर विपरीत हो रहा है यह भी सर्वमान्य है। यही वजह है कि हमारी धरोहर से कीमती औषधि पौधों को हम सहेजकर रखें और उनका उपयोग करके बिना किसी विपरीत असर के रोगों से मुक्ति प्राप्त कर सकें। इसके लिये जरुरी है कि हर कृषक अपनी खेती के कुछ भाग में औषधि फसल लगाकर स्वयं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाये तथा समाज की मदद भी करे। भारत में औषधि फसलों का रकबा लगभग 7.28 लाख हेक्टर है। तथा उत्पादन लगभग 9.98 लाख टन है परंतु यह निर्विवाद सत्य है कि इतने विशाल कृषि के क्षेत्र में से बहुत ही सीमित क्षेत्र में औषधि फसलों का उत्पादन किया जा रहा है। जबकि देश-प्रदेश की जलवायु भूमि तथा वर्षा सभी प्रकार की औषधि फसलों को पैदा करने के लिए उपयुक्त है। औषधि फसलों की खेती के लिये केंद्र सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत प्रोत्साहित किया जा रहा है। औषधीय फसलों से नए किसानों को जोड़कर उनकी उपज की न केवल मार्केटिंग की जाएगी, बल्कि प्रोसेसिंग यूनिट लगाने के लिए भी वित्तीय व्यवस्था की जाएगी।

खामोश की जातीं पर्यावरण बचाने वालों की आवाज़ें

• कुमार सिद्धार्थ

वैश्विक स्तर पर पर्यावरण कार्यकर्ताओं पर मंडरा रहे भयावह संकट को उजागर करने वाली हाल की 'ग्लोबल विटनेस' रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2012 से अब तक पर्यावरण संरक्षण के लिए संघर्ष करते हुए 2106 कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। इनमें से एक-तिहाई से अधिक हत्याएँ लैटिन अमेरिका में हुईं। अकेले वर्ष 2023 में कम-से-कम 196 लोगों की जानें गईं। इस रिपोर्ट से स्पष्ट है कि पर्यावरण की रक्षा करने वाले लोग आज भयंकर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खतरों का सामना कर रहे हैं। खनन, औद्योगिक और निर्माण परियोजनाओं के खिलाफ खड़े होने के कारण ये कार्यकर्ता सत्ता और पूंजी के निशाने पर आ जाते हैं।

'ग्लोबल विटनेस,' जो बीते ढाई दशक से तेल, गैस, खनन और वन क्षेत्रों में मानवाधिकारों और पर्यावरणीय शोषण की जाँच करता रहा है, ने इस रिपोर्ट को 200 से अधिक देशों के पर्यावरण कार्यकर्ताओं से बातचीत के आधार पर तैयार किया है। रिपोर्ट के अनुसार, इनमें से 90 फीसदी से अधिक लोगों को शारीरिक और मानसिक तौर पर प्रताड़ना का सामना करना पड़ा है और 25 फीसदी से अधिक पर हिंसक हमले हुए हैं। 70 फीसदी हत्याएँ खनन, बड़े बांधों और जंगलों की कटाई के खिलाफ आंदोलन करने वालों की हुई हैं।

रिपोर्ट बताती है कि विकास की आड़ में स्थानीय समुदाय, विशेषकर आदिवासी, किसान, महिलाएं और मछुआरे, खास निशाने पर हैं। जब ये समुदाय अपनी ज़मीन, जंगल और नदियों के संरक्षण की आवाज उठाते हैं, तो या तो उन्हें झूठे मामलों में फँसाया जाता है या फिर वे गोलियों का शिकार होते हैं। कोलंबिया, फिलीपींस, ब्राज़ील, कांगो और होंडुरास जैसे देश इस हिंसा के गवाह हैं। यहां हर साल सैकड़ों लोग सिर्फ इसलिए मारे जाते हैं क्योंकि वे अपने जंगल, नदियों, खेतों और अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत हैं।

कोलंबिया लगातार दूसरे साल सबसे खतरनाक देश माना गया था जहाँ 2023 में 79 पर्यावरण रक्षकों की हत्याएं हुईं। यह लगातार चौथा वर्ष है, जब कोलंबिया में सबसे अधिक हत्याएं दर्ज हुई हैं। वर्ष 2012 से अब तक ऐसी 461 हत्याएं हुई हैं, जो किसी भी देश के मुकाबले अधिक हैं। इसके बाद ब्राजील में 34, मैक्सिको और होंडुरास में 18-18 और फिलीपींस में 11 पर्यावरण रक्षकों की हत्याएं हुईं। मध्य अमेरिका पर्यावरण कार्यकर्ताओं के लिए

सबसे खतरनाक क्षेत्र बन चुका है, जहां प्रति व्यक्ति हत्याओं की दर सबसे अधिक रही है।

इनमें से अधिकांश हमले वनों की रक्षा करने वालों, खनन विरोधी आंदोलनों में शामिल लोगों और आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधियों पर हुए हैं। अक्सर ये हमले संगठित अपराधियों, सरकार समर्थित ठेकेदारों या निजी कंपनियों के इशारों पर होते हैं। इंडोनेशिया और थाईलैंड में कार्यकर्ताओं को 'रेड टैगिंग' (देशद्रोही) करार देकर मारा या गायब किया जा रहा है।

इन मामलों में भारत की स्थिति भी चिंताजनक है। रिपोर्ट के अनुसार 2012 से 2022 के बीच भारत में 71 पर्यावरण रक्षकों की हत्या दर्ज की गई। इनमें से कई पत्रकार थे, जो ज़मीन अधिग्रहण और अवैध खनन जैसे संवेदनशील विषयों पर रिपोर्टिंग कर रहे थे। वर्ष 2014 के बाद मारे गए 28 पत्रकारों में से 13 पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर काम कर रहे थे। भारत में रेत-माफिया और अवैध खनन पर लिखने वाले पत्रकारों को खासकर निशाना बनाया गया।

यदा-कदा प्लास्टिक की पन्नी बीन लेने, जीव-दया के नाम पर आवारा कुत्तों को दो-पांच रुपयों के बिस्किट खिला देने, कभी-कभार बिगड़ती हवा की लानत-मलामत कर देने और तीज-त्यौहारों पर पेड़ लगा देने को पर्यावरण संरक्षण मानने वालों को 'ग्लोबल विटनेस' की यह रिपोर्ट चौंका सकती है जिसके मुताबिक जल, जंगल, जमीन बचाने वाले हजारों पर्यावरण कार्यकर्ताओं को अपने बेहद कठिन काम के बदले जीवन तक का सौदा करना पड़ रहा है। क्या संकट हैं, पर्यावरण बचाने वालों के?

रिपोर्ट इंगित करती है कि भारत में नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं, पर्यावरणविदों और पत्रकारों पर बढ़ती निगरानी, गिरफ्तारी और बदनाम करने की घटनाओं में तेज़ी आई है। साथ ही, उनके खिलाफ 'गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम' (यूएपीए) जैसे कठोर कानूनों का दुरुपयोग कर उनकी आवाज़ को दबाया जा रहा है। सरकारों द्वारा कार्यकर्ताओं को वर्षों जेल में रखना, उनकी जमानत रोकना और उन्हें 'राष्ट्र विरोधी' करार देना जैसी घटनाएं कई राज्यों में सामने आई हैं।

'ग्लोबल विटनेस' के अनुसार, भारत में सामाजिक कार्यकर्ताओं और गैर-सरकारी संगठनों पर मनमाने आपराधिक आरोप लगाए जा रहे हैं, उन पर निगरानी रखी जा रही है और उनके बैंक खाते फ्रीज़ कर दिए गए हैं, जिससे नागरिक समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। रिपोर्ट इस बात पर भी ज़ोर देती है कि कई देशों में पर्यावरण कार्यकर्ताओं को ऐसे मुकदमों का सामना करना पड़ता है जिनका उद्देश्य ही जनहित में उठी आवाज़ों को रोकना है। ये मुकदमे इतने लंबे और खर्चीले होते हैं कि आम नागरिक उनमें फँसकर टूट जाते हैं या चुप हो जाते हैं।

आदिवासी समुदाय इससे सर्वाधिक प्रभावित हैं- कुल हत्याओं के 34 फीसदी शिकार आदिवासी रहे हैं। उनके पास कानूनी दस्तावेज़ों का अभाव, मुख्यधारा से दूरी और राजनीतिक समर्थन की कमी उन्हें कमजोर बनाती है, जबकि यही समुदाय सदियों से प्रकृति के साथ सहजीवन की मिसाल पेश करते आए हैं।

'ग्लोबल विटनेस' रिपोर्ट की भूमिका में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ. वंदना शिवा लिखती हैं - 'हम केवल जलवायु आपातकाल के दौर में नहीं हैं, बल्कि एक व्यापक प्रजातीय विलुप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में ये पर्यावरण कार्यकर्ता उन चुनिंदा लोगों में हैं, जो इस लड़ाई में डटे हुए हैं। वे न केवल सही हैं, बल्कि इसलिए भी सुरक्षा पाने के अधिकारी हैं क्योंकि हमारी प्रजाति और हमारे हरित ग्रह का भविष्य उन्हीं के संघर्षों पर टिका है।'

आज जब जलवायु संकट के प्रभाव दुनिया के हर कोने में महसूस किए जा रहे हैं - बाढ़, सूखा, जंगल की आग, समुद्र के जलस्तर में बढ़ोत्तरी - ऐसे समय में पर्यावरण रक्षकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। रिपोर्ट कुछ अहम सुझाव भी देती है - जैसे पर्यावरण रक्षकों की सुरक्षा के लिए विशेष कानून बनाना, उनके खिलाफ दमनकारी मुकदमों को रोका जाना और जिम्मेदार कंपनियों की जवाबदेही तय करना, लेकिन यह तभी संभव है जब नागरिक समाज, मीडिया और आम जनमानस इन मुद्दों को अपने विमर्श के केंद्र में लाएं। हाल ही में 'इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस' (आईसीजे) ने एक ऐतिहासिक निर्णय में कहा है कि जलवायु संकट से निपटना सभी देशों की कानूनी ज़िम्मेदारी है। यह फैसला बताता है कि अब जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय कानून का भी गंभीर मुद्दा बन चुका है। उम्मीद की जा रही है कि इससे उन लोगों को कुछ राहत मिलेगी जो पर्यावरण की रक्षा के लिए खतरों का सामना कर रहे हैं। **(सप्रेस)**

- सीता चौधरी, विषय वस्तु विशेषज्ञ
- डॉ. एन. के. मीना, विषय वस्तु विशेषज्ञ
- एम. पी. सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ
- डॉ. आर. के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद
भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल
ई-मेल : sitachoudhary110@gmail.com

सरसों की उन्नत खेती

सरसों और राई भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में शामिल हैं। राजस्थान में सरसों की खेती भरतपुर, सवाई माधोपुर, अलवर, करौली, कोटा, और जयपुर जैसे जिलों में व्यापक रूप से की जाती है। यह फसल कम लागत में अधिक लाभ देने वाली होती है। सरसों के हरे पौधों को पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में तथा बीज, तेल और खली को पशुओं के आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। इसकी खली का शीतल प्रभाव होने के कारण यह कई रोगों की रोकथाम में सहायक होती है। खली में निम्न पोषक तत्व नाइट्रोजनः 4-9%, फॉस्फोरसः 2.5% और पोटाशः 1.5% पाए जाते हैं। इन पोषक तत्वों के कारण विभिन्न देशों में जैविक खाद के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

सरसों का महत्व और उपयोग

भारत में सरसों एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसके बीज से 30-48% तक तेल प्राप्त होता है। इसके तेल का उपयोग खाना पकाने, मालिश करने, साबुन और ग्रीस बनाने, फल और सब्जियों के संरक्षण के लिए किया जाता है।

जलवायु

सरसों की खेती के लिए शरद ऋतु (रबी मौसम) आदर्श होती है। फसल के लिए 18-25 डिग्री सेल्सियस का तापमान उपयुक्त है। फूल आने के समय अधिक आर्द्रता, बारिश, और बादल फसल के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन परिस्थितियों में माहू या चौपा कीट का प्रकोप बढ़ सकता है।

मृदा

रेतीली से लेकर भारी मटियार मिट्टी में सरसों की खेती संभव है। बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी हल्की क्षारीय हो सकती है। लेकिन अम्लीय मिट्टी फसल के लिए हानिकारक होती है।

खेत की तैयारी

सरसों की खेती के लिए मुरमुरी (भुरभुरी) मृदा सर्वोत्तम होती है। खरीफ की फसल कटने के बाद एक गहरी जुताई करें, फिर 3-4 बार देसी हल से जुताई कर के पाटा लगा कर खेत को समतल और भुरभुरा बनाना आवश्यक है। असिंचित क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में खेत खाली छोड़ने से जल संरक्षण में मदद मिलती है। दीमक और अन्य कीटों के प्रकोप को रोकने के लिए अंतिम जुताई के समय क्विनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। एजोटोबैक्टर और पी.एस.बी. कल्चर (2-3 किलोग्राम) को 50 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर अंतिम जुताई के समय खेत में डालें।

बुवाई

सरसों की बुवाई के लिए 25-26°C तापमान आदर्श रहता है। बारानी क्षेत्रों में 15 सितंबर से 15 अक्टूबर तक सरसों की बुवाई करें और सिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के अंत तक बुवाई कर सकते है। 15 अक्टूबर से पहले सरसों की बुवाई करने से एफिड या माहू का प्रकोप कम आता है। कतारों में बुवाई करे। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी व पौधों से पौधों की दूरी 10 सेमी रखें। बीज की गहराई सिंचित क्षेत्र में 5 सेमी तथा असिंचित क्षेत्र में नमी के अनुसार रखें।

बीज की मात्रा

शुष्क क्षेत्रों में 4-5 किलोग्राम तथा सिंचित क्षेत्रों में 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की मात्रा पर्याप्त होती है। बुवाई से पहले बीज को 2.5 ग्राम मैन्कोजेब प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

सिंचित क्षेत्रों में 8-10 टन प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई से 4 सप्ताह पहले तथा बारानी क्षेत्रों में 4-6 टन सड़ी खाद वर्षा से पहले प्रति हेक्टेयर खेत में समान रूप से डालें। सिंचित क्षेत्र के लिए नत्रजन (नाइट्रोजन) 80 किलोग्राम, फॉस्फोरस 30-40 किग्रा और गंधक (जिप्सम) 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करे। नत्रजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय दें। तथा शेष नत्रजन पहली सिंचाई के समय दें।

सिंचाई प्रबंधन

यदि वर्षा पर्याप्त हो तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। जल की कमी होने पर कम से कम 2 सिंचाई करें। पहली सिंचाई बुवाई के 30-40 दिन बाद, दूसरी सिंचाई (फली बनते समय) 70-80 दिन बाद। यदि जल सीमित हो तो केवल एक सिंचाई (फूल आने के समय) 40-50 दिन की फसल में करें।

निराई-गुड़ाई और खरपतवार प्रबंधन

बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली निराई करें। छंटाई के द्वारा पौधों की संख्या नियंत्रित करें, और पौधों के बीच 8-10 सेमी की दूरी रखें। सिंचाई के बाद गुड़ाई करें। इससे खरपतवार नियंत्रित होता है और मिट्टी में नमी संरक्षित रहती है।

फसल कटाई

सरसों की फसल 120 से 150 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। जैसे ही पौधों की पत्तियाँ और फलियाँ पीली पड़ने लगें तुरंत कटाई करें। समय पर कटाई न करने पर फलियाँ चटकने लगती हैं, जिससे उपज में 5-10% तक की कमी हो सकती है।

उत्पादन

असिंचित में 15-20 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 20-30 क्विंटल प्रति हेक्टे. उपज प्राप्त होती है।

निष्कर्ष

सरसों की उन्नत खेती के लिए सही प्रजाती का चयन, उचित भूमि की तैयारी, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण जरूरी है। आधुनिक तकनीको एवं वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर उपज में वृद्धि की जा सकती है। जिससे किसानो की आय में सुधार होगा।

सरसों की उन्नत किस्में

डीआरएमआर 1165-40 (रुक्मणी)- यह सरसों की एक उन्नत किस्म है इसके पौधे की ऊंचाई 177-196 सेमी होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 22-26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसके बीजों में तेल की मात्रा 40 से 42.5 प्रतिशत तक होती है। यह सरसों किस्म 135-151 दिन में तैयार हो जाती है। सिंचित और असिंचित दोनों ही स्थितियों में सरसों की यह किस्म बेहतर पैदावार देती है।

डीआरएमआरआईसी 16-38 (बृजराज) - सिंचित क्षेत्रों में देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे की ऊंचाई 188 से 197 सेमी और बीज आकार 2.9 से 5.0 ग्राम है। यह किस्म 120 से 149 दिन की अवधि में परिपक्व हो जाती है। और इसमें तेल की मात्रा 37.6 से 40.9 प्रतिशत होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 16 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम होता है।

डीआरएमआर 2017-18 (राधिका)- सिंचित स्थिति में देर से बुआई के लिए सरसों की यह किस्म बेहतर है। DRMR 2017-15 सरसों किस्म की औसत उत्पादन क्षमता 1788 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इसके बीज में तेल की मात्रा 40.7 प्रतिशत तक होती है। इस किस्म की परिपक्वता अवधि 120 से 150 दिन की है। सरसों की इस किस्म में अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, कोमल फफूंद और चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम है।

डीआरएमआर 150-35 (भारतीय सरसों)- इस सरसों की पैदावार क्षमता 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें तेल की मात्रा 39.8 प्रतिशत तक होती है। पौधे की ऊंचाई 164-186 सेमी और परिपक्वता अवधि 114 दिन होती है।

डीआरएमआरआईजे-31 (गिरिराज) - सरसों फसल की एक उन्नत और प्रमाणित किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा 39-42.6% तक की होती है। इसकी पैदावार क्षमता 23-28 क्विंटल प्रति हेक्टे. की है। इसके पौधे की ऊंचाई 180-210 सेमी होती है। और परिपक्वता 137-153 दिन की है।

आर एच 30 - यह किस्म सिंचित और असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। गेहूं, चना, और जौ के साथ अंतरवर्तीय फसल के लिए आदर्श। पौधों की ऊँचाई लगभग 196 सेंटीमीटर, शाखाएँ 5 या अधिक। पकने का समय 120-130 दिन। उपज 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर ।

टी-59 (वरुणा)- यह 8 प्राथमिक शाखाओं वाली देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। फूल आने का समय 45-50 दिन व पकने का समय 130-135 दिन है। तेल की मात्रा 36% , उपज 15-18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर (असिंचित)। दाने मोटे और काले रंग के। मोयले के प्रकोप से बचने के लिए 15-20 अक्टूबर तक बुवाई करें।

पूसा बोल्ड - इस किस्म की ऊँचाई मध्यम व फलियाँ मोटी होती है। पकने का समय 130-140 दिन होता है। तेल की मात्रा 37-38% व उपज 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

बायो 902 (पूसा जयकिसान)- यह रोग प्रतिरोधी किस्म होती है। इसमें सफेद रोली और मुरझान रोगों का प्रकोप कम होता है। पौधे की ऊँचाई 160-180 सेमी होती है। पकने का समय 130-140 दिन होता है। तेल की मात्रा 38-40% व उपज 18-20 क्विंटल प्रति हे. होती है तथा इसका दाना झड़ता नहीं व कालापन लिए भूरे रंग का होता है।

औषधीय गुणों से भरपूर लहसुन

● डॉ. आईएस नरुका ● डॉ. आरके शर्मा
● डॉ. आरपी पटेल, मो. : 9425977306

औषधीय गुणों से भरपूर लहसुन के निर्यात से अपार विदेशी मुद्रा अर्जन की प्रबल संभावनायें हैं क्योंकि लहसुन उत्पादन के क्षेत्र में मध्यप्रदेश देश में अव्वल है। परंतु हमारी उत्पादकता काफी कम है, जिसके मूल में कृषकों की उन्नत तकनीकों के प्रति जानकारी का अभाव है।

भूमि

मध्यम काली दोमट भूमि जिसमें जीवों में पदार्थ तथा पोटाश भरपूर हो, साथ ही जहां जल निकासी सही हो।

भूमि की तैयारी

खेत तैयार करने के लिए ट्रैक्टर या देशी हल की सहायता से भूमि की हल्की जुताई करें क्यों लहसुन की जड़ें भूमि में 10-12 सेमी से अधिक गहरी नहीं जाती है। इसके बाद आड़ा बखर चलाकर भूमि को भुरभुरा बनाएं और पाटा चलाकर खेत समतल कर लें। इस प्रकार तैयार खेत में अपनी सुविधानुसार उचित आकार की क्यारियां और सिंचाई की नालियां बना लें।

प्रमुख किस्में

एग्रीफाउण्ड सफेद (जी-41), यमुना सफेद (जी-1), यमुना सफेद-2 (जी-50), यमुना सफेद-3 (जी-282), एग्रीफाउण्ड पार्वती, यमुना सफेद-4 (जी-323)

खाद एवं उर्वरक

लहसुन की अच्छी पैदावार लेने के लिए 15-20 टन प्रति हैक्टेयर पकी हुई गोबर खाद को खेत में अंतिम तैयारी के समय भूमि में मिला देना चाहिए। इसके अलावा 260 किलो यूरिया, 375 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश एवं 375 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। नाइट्रोजन की एक तिहाई तथा फास्फोरस एवं पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुआई के समय दें। शेष नाइट्रोजन की मात्रा को बराबर हिस्सों में बुआई के 20-25 एवं 40-45 दिन बना देना लाभदायक है।

लहसुन की उत्पादन वृद्धि में सूक्ष्म तत्वों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। बोरेक्स का 10 किग्रा/ हेक्टेयर की दर से उपयोग कंदों का आकार तथा उत्पादन को बढ़ाता है।

बीज एवं बुआई

सामान्यतः सितम्बर-अक्टूबर लहसुन लगाने का उचित समय है। लहसुन की बुआई इसकी कलियां द्वारा होती है। प्रत्येक कंद में औसतन 15-20 कलियां होती हैं। बुआई से पूर्व कलियों का सावधानीपूर्वक अलग कर लें। परंतु ध्यान रखें कि कलियों के ऊपर की सफेद पतली झिल्ली को नुकसान न हों। बुआई के लिए 8-10 मिमी, रोगरहित, सुगठित कलियों का ही चुनाव करें। प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि कलियों से अधिकतम उपज प्राप्त होती है। इस बात का ध्यान अवश्य रखें की कंद के बीच लंबी, बेलनाकार कलियों को न लगाएं क्योंकि इस प्रकार की कलियों से अल्प विकसित कंद प्राप्त होते है। बुआई से पूर्व कलियों को फफूंदनाशक दवा (बाविस्टीन) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में 2 मिनट तक डुबोकर उपचारित करें। एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए लगभग 4.5-5 क्विंटल कलियों की आवश्यकता होती है।

तैयार क्यारियों में 10-15 सेमी दूरी पर लाइने बना लें इन लाइनों में 8-10 सेमी दूरी पर कलियों की बुआई करें। कलियों को 5 से 7 सेमी की गहराई पर नुकीला भाग ऊपर रखकर बुवाई करते हैं।

सिंचाई

लहसुन की बुआई के तुरंत बाद सिंचाई अवश्य करना चाहिए ताकि कलियों का अंकुर अच्छा हो सकें। ध्यान रखे की पौधों की प्रारंभिक अवस्था में भूमि में नमी की कमी न हो वरना पौधे की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लहसुन की कोशिकायें बड़ी या पतली सतह वाली होने के कारण इसके पौधों से जल का उत्स्वेदन अधिक होता है। अतः पौधों से हुई जल की कमी की पूर्ति के लिए शीघ्र सिंचाई करने की आवश्यकता है।

खरपतवार नियंत्रण

खेत को खरपतवार रहित रखने के लिए पहली निराई-गुड़ाई बुआई के 20-25 दिन बाद तथा दूसरी 40-50 दिन बाद करनी चाहिए। पेंडीमिथालीन 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर सक्रिय तत्व लहसुन की बुआई के एक दिन बाद डालने से खरपतवार नियंत्रित होते हैं तथा कंदों की अच्छी उपज प्राप्त होती है।

खुदाई

लहसुन के कंद 130-180 दिन में खोदने वाले हो जाते है। इसका पौध जब ऊपर से सूखकर झुकने या गिरने लगता है तो यही अवस्था लहसुन की खुदाई के लिए उपयुक्त होती है। इस अवस्था में प्राप्त कंद अच्छी गुणवत्ता वाले होते हैं।

अश्वगंधा उगायें लाभ कमायें

● डॉ. सुधीर सिंह भदौरिया ● डॉ. प्रद्युम्न सिंह
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि वि.वि., ग्वालियर
email : dtpmasters@yahoo.co.in

अश्वगंधा विथानिया सोमनीफेस सोलेनेसी कुल का पौधा है तथा यह लगभग समस्त भारत में पाया जाता है। अधिकतर यह राजस्थान, म.प्र., गुजरात, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, केरल एवं हिमाचल के पर्वतों पर 1600 मीटर ऊंचाई तक पाया जाता है। भारत के अतिरिक्त यह औषधीय पौधा जॉर्डन पूर्वी अफ्रीका, मिस्त्र, पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रांत में, श्रीलंका, स्पेन, मोरक्को में भी पाया जाता है। यदि इसके ताजे पत्ते तथा जड़ को मसल कर सूंघें तो उनसे घोड़े के मूत्र जैसी गंध आती है। इसी कारण से इसका नाम अश्वगंधा रखा गया है। पत्ते हल्के हरे रंग के, सफेद रोयेंदार तथा अंडाकार होते हैं। फूल पत्रकोण से निकलकर, शाखाओं के अग्रभाग पर दिसम्बर से मार्च तक आते हैं। फल गोलाकार तथा रसभरी के समान होते हैं। फल के अंदर असंख्य बीज होते हैं। इसकी जड़ मूली की तरह लेकिन पतली होती है। जिसकी मोटाई 2.5 से 4.0 से.मी. तक तथा लंबाई 30 से 50 से.मी. तक होती है। यह जंगलों में भी बहुत मिलता है परंतु उगाई गई अश्वगंधा की जड़ें अच्छी होती हैं।

भूमि

इसकी खेती के लिये बलुई दोमट से हल्की रेतीली भूमि जिसका पी.एच. 7 से 8 हो तथा जल निकास की पर्याप्त व्यवस्था हो, उपयुक्त रहती है। निम्न भूमि में भी अश्वगंधा की खेती से संतोषजनक उपज ली जा सकती है।

खेत की तैयारी

डिस्क हैरो या देशी हल से दो या तीन बार अच्छी तरह जुताई करके सुहागा लगाकर खेत को समतल बना लें। खेत में खरपतवार ढेले नहीं होने चाहिए।

किस्म

जवाहर अश्वगंधा-20, जवाहर अश्वगंधा-134 किस्में मुख्य हैं। सीमेप ने भी पोषिता किस्म विकसित की है।

बोने का समय

अश्वगंधा की बुवाई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिये। जब एक-दो बार वर्षा हो जाती है तथा खेत की जमीन अच्छी तरह से संतृप्त हो जाये तभी बुवाई करनी चाहिए। अगस्त का महीना अश्वगंधा की बुवाई के लिये उत्तम है। सिंचित अवस्था में उसकी बिजाई सितम्बर के महीने में भी कर सकते हैं।

बीज की मात्रा

अगर बिजाई छिटककर की जाती है तो लगभग 4 किलो बीज की आवश्यकता होती है। लाईनों में बिजाई करने से बीज की मात्रा कम लगती है। नर्सरी में बुवाई करने के लिये 2 किलो बीज प्रति एकड़ काफी होता है।

बोने की विधि

सीधे बीज से अश्वगंधा की बिजाई अधिकतर छिड़काव द्वारा की जाती है। बीजों को बोने से पहले नीम के पत्तों के काढ़े से उपचारित करें। जिससे फफूंदी आदि से हानि न होने पाये। अश्वगंधा अच्छी फसल के लिये कतार के कतार का फासला 20 से 25 से.मी. तथा पौधे से पौधे का 4-6 से.मी. होना चाहिये। बीज 2-3 से.मी. से अधिक गहरा नहीं होना चाहिये। इससे एक एकड़ में लगभग 3-4 लाख पौधे लग सकते हैं। बुवाई के लगभग 15 दिनों बाद अंकुरण निकलने शुरू हो जाते हैं। नर्सरी के पौधे तैयार करके भी खेत में लगाये जा सकते हैं तथा 6-7 सप्ताह बाद पौधों को नर्सरी से खेत में लगा दिया जाता है। जिससे लाइन से लाइन का फासला 20-25 से.मी. तथा पौधे से पौधे का फासला 4-6 से.मी. रखना चाहिये। एक एकड़ नर्सरी के लिये 200 वर्गमीटर क्षेत्रफल काफी होता है। नर्सरी में क्यारियां 1.5 मीटर चौड़ी तथा लंबाई सुविधानुसार रखकर बनाएं। नर्सरी जमीन से 15-20 से.मी. उठी हुई हो तथा अच्छे जमाव के लिये नर्सरी में नमी बनाएं रखें?

खाद

अच्छी फसल लेने के लिये खेत की तैयारी के समय 8-10 टन गोबर की अच्छी गली-सड़ी खाद मिला दें।

सिंचाई

अश्वगंधा की फसल को पानी में अधिक आवश्यकता नहीं होती व वर्षा समय पर न हो तो अच्छी फसल लेने के लिये 2-3 सिंचाई करें।

निराई - गुड़ाई - अश्वगंधा की अच्छी फसल के लिये समय-समय पर खरपतवार नियंत्रण करें ताकि जड़ों को अच्छी बढ़त हो सके। इसके लिये बिजाई के 25-30 दिन बाद खुरपे से तथा 45-50 दिन बाद कसौले से गुड़ाई करें। अगर दो या अधिक पौधे एक साथ हो तो छंटाई भी कर दें।

मृदा सुधार का आधार व किसानों का मित्र केंचुआ खाद

• घनश्याम बामनिया • कीर्ति मालवीय
• दीपिका मालवीय
mailto:ghanshyam95755@gmail.com

केंचुआ खाद क्या है

केंचुओं के प्रयोग द्वारा अपघटन शील कार्बनिक पदार्थों जैसे- कूड़ा-करकट, आधा सड़ा गोबर, कृषि अवशेष, भूसा, सूखी घास, धान का पुआल, सब्जियों के छिलके आदि से तैयार खाद को केंचुआ खाद कहते हैं। इसके अलावा किसी अन्य तरीके से खाद बनाने में अधिक समय लगता है, और इनमें पोषक तत्वों की हानि होने का खतरा रहता है। केंचुओं के द्वारा निर्मित खाद में पोषक तत्वों की मात्रा भरपूर होती हैं। केंचुआ खाद एक प्राकृतिक, प्राचीन एवं उत्तम जैविक खाद हैं। यह प्राकृतिक जैविक उत्पाद है, जिसका मृदा व कृषि उत्पाद में किसी प्रकार से हानिकारक अवशेष नहीं रहता है।

तकनीक

केंचुए कई तरह के कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों को खाकर उसके आयतन को 40 से 60 प्रतिशत तक घटा देते हैं। केंचुआ अपघटन सील अपशिष्ट कार्बनिक पदार्थों जैसे भूसा, सूखी घास आदि को तेजी से खाकर वर्मी कास्ट के रूप में विसर्जित करता है। यही केंचुआ खाद कहलाता है। केंचुआ खाद में वर्गीकास्ट के अतिरिक्त केंचुए का मल, अण्डे, कोकून, लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु, मुख्य एवं सूक्ष्म पोषक तत्व और अपचित जैविक पदार्थों का मिश्रण सम्मिलित रहता है। केंचुआ खाद मृदा को अधिक समय तक उपजाऊ एवं कृषि हेतु उपयोगी बनाता है। केंचुओं की विभिन्न प्रजातियों में से यूड्रिलस यूजिनी, आईसीनिया फेटिडा, फेरियोनिक्स एक्सकवेट्स और पेयोनिकस सन्सीवेरिकस प्रजातियाँ मुख्य रूप से केंचुआ खाद बनाने में इस्तेमाल होती हैं।

केंचुआ खाद बनाने की सामग्री

2 फुट ऊँचा टाका, (लंबाई एवं चौड़ाई आवश्यकतानुसार), कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थ जैसे-भूसा, पेड़ों की पत्तियाँ, खरपतवार आदि गोबर, रॉक फास्फेट (फास्फोरस युक्त केंचुआ खाद हेतु) प्रौढ़ केंचुए (1 किग्रा./क्विंटल अपशिष्ट पदार्थ), पानी आदि।

इन बातों का विशेष ध्यान रखें

- टांके में भरने से पहले कार्बनिक पदार्थों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बारीक कर लें।
- ध्यान रहे कि पदार्थ टांका भराई से पहले कार्बनिक पदार्थों में से कांच, पत्थर, धातु, प्लास्टिक रबर, आदि अलग कर लें।
- कार्बनिक पदार्थ और गोबर का अनुपात 1:2 रखें।
- कार्बनिक पदार्थ और गोबर के मिश्रण को एक महिने तक टांके में रखें जिससे उसकी गरमी निकल जाती है। और केंचुओं के लिए पोषक वातावरण का निर्माण होता है।
- किसी भी स्थिति में एक महिने से पहले मिश्रण में केंचुए ना छोड़ें। अधिक तापमान की वजह से केंचुए मर जाते हैं।
- केंचुआ की मात्रा आधा से एक किग्रा. प्रति क्विंटल कार्बनिक पदार्थ होनी चाहिए।
- टांके में 40-50 प्रतिशत की नमी को बनाए रखें।
- अधिक नमी से हवा अवरुद्ध हो जाती है जिससे केंचुए की क्रियाशीलता कम हो जाती है।
- टांके को धूप तथा वर्षा से बचाने हेतु छप्पर बनाएं।
- टांका पेड़ों की छाया में बनाएं जिससे तापमान सामान्य एवं अनुकूल बना रहे।
- टांके के पास स्थाई पानी का स्त्रोत होना आवश्यक है।
- ध्यान रहे कि खाद निकालते समय उसमें केंचुए ना हो। ऐसी स्थिति में केंचुओं को पुनः टांके में डालें।

केंचुआ खाद में पोषक तत्वों की मात्रा

पोषक तत्व	मात्रा का प्रतिशत
नाइट्रोजन	15-19 प्रतिशत
फास्फोरस	1.8-20 प्रतिशत
पोटेशियम	0.6-0.9 प्रतिशत

इसके अलावा केंचुआ खाद में सूक्ष्म पोषक तत्व एवं जीव रासायनिक पदार्थ भी अच्छे पाये जाते हैं।

केंचुआ खाद बनाने की विधि

- सर्वप्रथम टांके को अच्छी तरह से साफ करें।
- केंचुआ खाद बनाने के लिए एकत्रित अपशिष्ट पदार्थों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।
- ताजा गोबर और अपशिष्ट पदार्थों को 2:1 के अनुपात में अच्छी तरह से मिला लें। जैसे 100 किग्रा. अपशिष्ट पदार्थों के लिए 200 किग्रा. गोबर की आवश्यकता होगी।
- अनुपात में मिलाए हुए पदार्थों को टांके में भरें।
- टांके में पानी का छिड़काव करके 40 प्रतिशत नमी बरकरार रखें।
- 15 दिन के बाद मिश्रण को अच्छी तरह से मिलाकर पलटाएं।
- तकरीबन एक महिने बाद मिश्रण को दोबारा मिलाकर पलटाएं।
- अब टांके में प्रौढ़ केंचुए 1/2 से 1 किग्रा. प्रति क्विंटल कार्बनिक पदार्थ के हिसाब से लें।
- कैंर्जी को डालने के उपरान्त इसके ऊपर गोबर, पत्ती आदि की 6 से 8 इंच की सतह बनानी चाहिए।
- इसके बाद टांके को टाट-पट्टी से ढांक दें।
- झारी से टाट-पट्टी पर आवश्यतानुसार पानी छिड़कते रहें ताकि 50 से 55 प्रतिशत तक नमी बनी रहे।

- केंचुए डालने के 90-100 दिन बाद टांके में चायपत्ती समान, मिट्टी समान सौंधी संघवाली एवं अच्छी गुणवत्ता की केंचुआ खाद तैयार हो जाती है।
- खाद को टांके से निकालने के लिए आठ दिन पूर्व से पानी का छिड़काव बंद कर दें।
- टांके में ही खाद के छोटे-छोटे ढेर बना दें जिससे केंचुए खाद की निचली सतह में चले जाते हैं। केंचुआ खाद को छत से अलग करके सुरक्षित जगह पर संवाहित करें।
- संवाहित केंचुआ खाद को फसल की जरूरत के अनुसार उपयोग करें।

प्रसव के बाद मादा पशु का रखरखाव

प्रसव की अवस्थाएं

(1) प्रथम अवस्था में मादा पशु लगभग 10-12 घंटे का समय लेता है इस अवस्था में बच्चे की प्रथम पानी की थैली जिसे सामान्य भाषा में मटाडी कहते हैं बाहर निकलती हैं।

(2) द्वितीय अवस्था में बच्चा बाहर आता है, इस अवस्था में लगभग आधे से तीन घंटे का समय लग सकता है।

(3) तृतीय अवस्था में पलेसेंटा (जेर या मैली) बाहर आती है, इस अवस्था में लगभग 8-10 घंटे का समय लग सकता है।

पशुपालक इन बातों का ध्यान रखें

प्रसव होते समय मादा पशु को एकांत में छोड़ दें और सामान्य प्रसव होने दें।

कुछ पशुपालक जैसे ही बच्चे के पैर दिखाई देते है तो उनको खींचने लग जाते है तो इस दौरान ये जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, पशु को आराम से ब्याने दें , जब बच्चे के दोनों पैर और सिर दिखाई देने लग जाए तब अगर आवश्यकता हो तो पशुपालक अपने हाथ को साबुन से धोकर बच्चे को बाहर खींच सकता हैं या कभी-कभार बच्चे के पैरों में रस्सी बांधकर भी खींच सकता है इस दौरान पशुपालक हाथों पर मिट्टी का उपयोग नहीं करें।

ब्याने में कठिनाइयां

अगर मादा पशु, प्रसव में ज्यादा समय ले रहा है लगभग 15 घंटे से ज्यादा समय और बार-बार जोर लगा रहा फिर भी बच्चा बाहर नहीं आ रहा है तो इस दौरान हो सकता है आपको बच्चे का केवल एक पैर ही दिखाई दे, या केवल बच्चे का सिर ही दिखाई दे तो इस दौरान बच्चे का पैर या सिर बच्चेदानी में मुड़ा हुआ हो सकता है या बच्चेदानी में आटा आया हुआ हो सकता है तो ऐसी स्थिति में नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

मादा पशु की देखभाल

प्रसव के बाद माता को अपने बच्चे को चाटने दे और प्रसव के 1-2 घंटे में बच्चे को मां का दूध पिलाए ऐसा करने से माता के शरीर में ऑक्सीटोसिन का स्राव होता जिससे जेर जल्दी गिरने में सहायता मिलती है।

प्रसव के बाद मादा पशु को गुड़ अजवाइन का काढ़ा पिलाए एवम थोड़ी खल- काकडा थोड़ा गुड़ भी दे सकते हैं ये पशु को ऊर्जा प्रदान करते हैं, साथ ही साथ थोड़ा दलिया एवं मेथी उबाल कर दे सकते हैं।

प्रसव के बाद मादा पशु में मिल्क फीवर होने की संभावना होती है इससे बचने के लिए पशु का पूरा दूध एक साथ नहीं निकालें अगले 2-3 दिन तक थोड़ा-थोड़ा दूध उसकी लेवटी में छोड़े।

जेर नहीं गिरने पर क्या करें

सामान्यतया जेर लगभग प्रसव के 5-6 घंटे में गिर जाती हैं अगर जेर 8-12 घंटे तक भी नहीं गिरती है तो नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें। कुछ पशुपालक जेर (प्लेसेंटा) के वजन बांध देते ह ऐसा करने से बच्चेदानी में सूजन आ जाती है जिससे उसकी प्लेसेंटा भी नही गिर पाती हैं तो ऐसा नहीं करें। प्लेसेंटा के नहीं गिरने की समस्या से बचने के लिए पशुपालक अपनी गाय भैंस को बाजार में कुछ युटेरोटॉनिक आयुर्वेदिक दवाइयां मिलती है वो हल्के निवाया पानी में 250 मिली तक पीला सकते है।

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

समस्या- फूल गोभी की विभिन्न परिस्थितियों में लगने वाली जातियों का उल्लेख करें ताकि उन्हें समय से लगाया जा सके।

- रामसेवक चौधरी

समाधान -फूलगोभी की कास्त के लिये उसकी

नर्सरी मई-जून में ही डाल दी जाती है और मौसम देखकर रोपाई शुरू करके अगेती फसल ली जाती है। सितम्बर से जनवरी तक लगाई जाने वाली किस्म निम्नानुसार है।

- माह नवम्बर में तैयार होने वाली किस्में पूसा शरद, इम्प्रूव्ड जापानी, सलेक्शन 235, सी 12।
- दिसम्बर माह में तैयार होने वाली किस्में पूसा सिंथेटिक, पूसा शुभ्रा, पूसा अगहनी, पंत गोभी 4, पंजाब ज्वाइंट तथा हिसार 1।
- जनवरी और उसके बाद की पिछेती किस्में पूसा स्नोबाल, पूसा स्नोबाल 1, पूसा स्नोबाल 2, पूसा स्नोबाल 16।

समस्या- मैं अपने खेत में अमरूद लगाना चाहता हूं कृपया रोपण संबंधित तकनीकी बतायें।

- रघुनन्दन सिंह

समाधान- अमरूद लगाने का उपयुक्त समय

जून माह है जहां पानी की सुविधा हो वहां फरवरी में भी लगाया जा सकता है। एक बार लगाने के बाद अमरूद वर्षों फल देता रहता है आप भी लगायें। परंतु तकनीकी अपनाकर -

- अच्छे जल निथार वाली गहरी मिट्टी उपयुक्त होती है।
- बीज/वनस्पति का प्रवर्धन द्वारा अच्छे पौधे तैयार किये जा सकते हैं। बीज से तैयार पौधों की तुलना में वानस्पतिक प्रवर्धन के पौधे अच्छे तथा जल्दी फल देते हैं।
- जातियों में इलाहाबाद सफेद, कोहिनूर सफेद, सफेद जाम, अर्का मृदुला, अर्का अमूल्य।
- अच्छी तरह से जुती तथा समतल भूमि में 1 मीटर के चौड़े, लम्बे तथा गहरे गड्ढे बनवायें। प्रत्येक गड्ढों में 30 किलो गोबर खाद भरें।
- प्रत्येक गड्ढों में 20 किलो नीम की खली भी डाले।
- वार्षिक रखरखाव स्वरूप रसायनिक उर्वरक भी दिया जाये।
- बरसात छोड़कर 10 दिनों के अंतर से सिंचाई की जाये।

समस्या- मैं पत्तागोभी की कास्त करना चाहता हूं। कौन सी जाति, कितना बीज, कृपया विस्तार से लिखें।

- ताराचन्द्र

समाधान- आपका प्रश्न सामयिक है पत्तागोभी

लगाने का समय चल रहा है। नर्सरी डालें या तैयार पौध यदि मिल सके तो उसे लेकर मुख्य खेत में रोपाई करके शीघ्र फसल तैयार करके लाभ कमायें आपको निम्न तकनीकी अपनानी होगी।

- इसके लिये बालुई दोमट भूमि उपयुक्त होगी।
- जातियों में गोल्डन एंकर, प्राईड आफ इंडिया, पूसा ड्रेमहेड,बहार, प्रगति, शताब्दी, बरखा आदि लगायें।
- इसकी लाल किस्म भी मिलती है रेड राक, लार्जरेड, रेड जिनिस, रेड हेड एवं रूबी लाल।
- बीज की मात्रा 300-600 ग्राम/हे. बीज की इस मात्रा से प्राप्त पौधे से एक हेक्टर में रोपाई की जा सकती है।
- बीज का उपचार गर्म पानी में करने से अच्छा अंकुरण होता है 5 डिग्री से. ग्रे. पानी में आधा घंटा तक बीज को डुबोने के बाद सुखाकर रोपणी में डालें।
- शीघ्र पकने वाले किस्मों को कतार से कतार 45×45 तथा पौध से पौध 30×30 से.मी. रखें। मध्यम तथा देरी से आने वाली किस्मों को कतार से कतार 60×60 तथा पौध से पौध 45×45 से.मी. दूरी रखें।
- गोबर की खाद 200 क्विं. के साथ यूरिया 300 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 500 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 66 किलो/हे. की दर से डालें।

समस्या- गांठ गोभी कब लगाई जाती है पूरी तकनीकी से अवगत करायें।

- सुरेश चौधरी

समाधान- आप गांठ गोभी लगाना चाहते हैं। यह समय उसे लगाने का चल रहा है। आप को निम्न तकनीकी अपनानी होगी।

- बालुई दोमट भूमि उपयुक्त होती है।
- किस्मों में सफेद वियना तथा परपल वियना प्रमुख है।
- बुआई का समय अगस्त से नवम्बर।
- 1 से 1.5 किलो की नर्सरी में लगाये पौध एक हेक्टर के लिये पर्याप्त होगें।
- भूमि की तैयारी अच्छी तरह करके 5×3 मीटर की क्यारियों में पौध रोपण करें।
- यूरिया 300 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 500 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 60 किलो प्रति हेक्टर।
- यूरिया की आधी मात्रा स्फुर, पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपण के समय डालें शेष आधी मात्रा बराबर 4 भागों में बांटकर टाप ड्रेसिंग करें।
- सिंचाई 10 से 15 दिनों के अंतर से की जाये।

समस्या- मेरे पास 7 बीघा जमीन है मैं चना लगाना चाहता हूं अच्छे उत्पादन के लिये महत्वपूर्ण बिन्दु बतायें।

- झुमुकलाल, बनखेड़ी

समाधान- आप चने की कास्त करना चाहते हैं अगले माह से रबी फसलों की बुआई का समय आ रहा है। अच्छे उत्पादन के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं से आप परिचय करें।

- खेत की तैयारी अच्छी तरह से की जाना

चाहिये। अक्सर साधारण तैयारी करके बोनी निपटाई जाती है।

- सही समय पर बुआई करें अक्टूबर माह उपयुक्त है। सिंचित चना थोड़ी देर से लगाया जा सकता है।
- विकसित जातियां जैसे जे.जी. 315, जे.जी.218, जे.जी. 74, भारती, विशाल, विजय लगायें।
- बीज की बुआई नमी में ही की जाये ताकि अच्छा अंकुरण प्राप्त हो सके।
- पिछली फसल यदि सोयाबीन थी तो कटाई उपरांत खेत में से सोयाबीन के ऊगे पौधों को निकाल दें अन्यथा इल्ली का प्रकोप अधिक होगा।
- संतुलित उर्वरक एवं बीज की मात्रा सिफारिश के अनुरूप ही दें।
- खेत में टी आकार की खूटियां लगायें।
- चना, सरसों चना-अलसी की अंतरवर्तीय फसल लगायें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)

फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

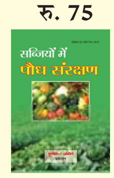

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

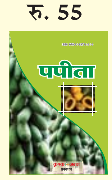
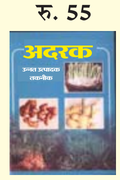
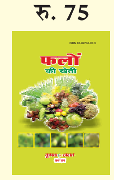

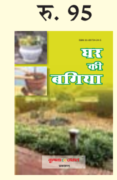

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✓ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम

ग्राम पोस्ट तह.

जिला फोन/मोबा.

कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या

संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

घर में ही उगा सकते हैं ऑर्गेनिक तरीके से लौकी

सेहत के लिए फायदेमंद

जिस तरह से बाजारों में मिलावटी खाद्य पदार्थ मिलते हैं ठीक उसी तरह से सेहत के लिए हानिकारक दवाईयों से सब्जियों को भी पकाकर बेचने का सिलसिला जारी है लेकिन अब लोग सावधानी बरतने लगे हैं और ऑर्गेनिक तरीके से उत्पादित सब्जियों को खरीदना पसंद करते हैं।

कृषि वैज्ञानिक यह भी बताते है कि यदि आप घर में ही लौकी और अन्य सब्जियां उगाना चाहते है तो कुछ आसान टिप्स को आजमाया जा सकता है। लौकी जैसी सब्जी की ही बात कर ली जाए तो इसे घर में किसी गमले में ही आसानी से उगाया जा सकता है। ऑर्गेनिक तरीके से उत्पादित लौकी सेहत के लिए भी फायदेमंद रहती है।

अगर आप अपने घर में लौकी उगाना चाहते हैं और उससे अच्छी क्वालिटी की उपज लेना चाहते हैं तो बेहद जरूरी है कि आप इसकी उन्नत किस्मों का चुनाव करें। अच्छी उपज के लिए आप अच्छी किस्म के जैविक बीजों को ले सकते हैं जैसे- पूसा समर प्रोलिफिक या फिर अर्का बहार। ध्यान देने वाली बात ये है कि रोगमुक्त पैदावार के लिए जरूरी है कि आप बुवाई से पहले लगभग 12 घंटे तक बीजों को पानी में भिगोकर रखें ताकि अंकुरण भी जल्दी हो।

लौकी एक बेल वाली सब्जी है इसलिए बढ़ने के साथ-साथ इसकी बेलें फैलती हैं जिसके लिए बड़े गमले की जरूरत पड़ती है। इसके लिए आपको 18 से 24 इंच का गहरा

और चौड़ा गमला या फिर ग्रो बैग लेना होगा। इसके बाद गमले में 50 फीसदी सामान्य मिट्टी, 30 फीसदी गोबर की खाद और 20 फीसदी बालू या फिर कोकोपीट मिलाएं। आपको इस बात का खास खयाल रखना होगा कि गमले में नीचे छेद हो ताकि हवा का संचार न रुके।

गमले में मिट्टी की तैयारी करने के बाद उपचारित किए गए 2 से 3 बीजों को गमले में करीब 1 इंच की गहराई में बोएं। बीज बुवाई के बाद शुरुआत के 2 दिनों में गमले को पानी दें, लेकिन ध्यान रहे कि जरूरत से ज्यादा पानी देने पर बीज सड़ सकते हैं और नुकसान हो सकता है। बता दें कि, बीजों बुवाई के लगभग 6 से 10 दिनों बाद बीज अंकुरित होते हैं।

गमले में लगाए गए लौकी के पौधे को भरपूर मात्रा में पोषण मिले और पौधा अच्छे से ग्रो करे इसके लिए जरूरी है कि पौधे को सही खाद दी जाए। लौकी के पौधे की ग्रोथ के लिए जरूरी है कि आप हर 15 से 20 दिन में गमले में गोबर की खाद या वर्मीकंपोस्ट जरूर डालें। साथ ही आप नीम के तेल का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके इस्तेमाल से कीटों को दूर रखने में मदद मिलती है। इसके अलावा जैसे-जैसे आपका पौधा बढ़े वैसे - वैसे उसे किसी जाली पर चढ़ाते जाएं ताकि बेलों को सहारा मिलता रहे.

लौकी के बीजों की बुवाई के करीब 50 से 60 दिनों में पौधे में फल और फूल आना शुरू हो जाते हैं। बाक करें लौकी की कटाई की तो जब लौकी नरम और हल्के हरे रंग की हो तब उसे कटाई करना सही होता है। जरूरत से ज्यादा पक जाने पर लौकी की स्वाद बिगड़ सकता है। बता दें कि, घर पर उगाई गई लौकी से आप करीब 10 से 15 लौकी प्राप्त कर सकते हैं।

सेहत के नुस्खे

यदि आप अपनी सेहत बनाने की सोच रहे हैं तो सबसे पहले पेट साफ करने की जरूरत है. पेट में कब्ज रहेगा तो कितने ही पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें, लाभ नहीं होगा. भोजन समय पर तथा चबा-चबाकर खाना चाहिए ताकि पाचन शक्ति ठीक बनी रहे, फिर पौष्टिक आहार या औषधि का सेवन करना चाहिए.

आचार्य चरक ने कहा है कि पुरुष के शरीर में वीर्य तथा स्त्री के शरीर में ओज होना चाहिए, तभी चेहरे पर चमक व क्रांति नजर आती है और शरीर पुष्ट दिखता है. हम यहां कुछ ऐसे पौष्टिक पदार्थों की जानकारी दे रहे हैं, जिन्हें किशोरावस्था से लेकर युवावस्था तक के लोग सेवन कर लाभ उठा सकते हैं और बलवान बन सकते हैं-

- सोते समय एक गिलास मीठे गुनगुने गर्म दूध में एक चम्मच शुद्ध घी डालकर पीना चाहिए.
- दूध की मलाई तथा पिसी मिश्री जरूरत के अनुसार मिलाकर खाना चाहिए, यह अत्यंत शक्तिवर्धक है.
- एक बादाम को पत्थर पर घिसकर दूध में मिलाकर खाना चाहिए, यह अत्यंत शक्तिवर्धक है.
- छाछ से निकाला गया ताजा मक्खन तथा मिश्री मिलाकर खाना चाहिए, ऊपर से पानी बिलकुल न पिएं.
- 50 ग्राम उड़द की दाल आधा लीटर दूध में पकाकर खीर बनाकर खाने से अपार बल प्राप्त होता है. यह खीर पूरे शरीर को पुष्ट करती है.
- प्रात: एक पाव दूध तथा दो-तीन केले साथ में खाने से बल मिलता है, क्रांति बढ़ती है.
- एक चम्मच असगंध चूर्ण तथा एक चम्मच मिश्री मिलाकर गुनगुने एक पाव दूध के साथ प्रात: व रात को सेवन करें, रात को सेवन के बाद कुल्ला कर सो जाएं. 40 दिन में परिवर्तन नजर आने लगेगा.
- सफेद मूसली या धोली मूसली का पावडर, जो स्वयं कूटकर बनाया हो, एक चम्मच तथा पिसी मिश्री एक चम्मच लेकर सुबह व रात को सोने से पहले गुनगुने एक पाव दूध के साथ लें. यह अत्यंत शक्तिवर्धक है.
- सुबह-शाम भोजन के बाद सेवफल, अनार, केले या जो भी मौसमी फल हों, खाएं.
- सुबह एक पाव ठंडे दूध में एक बड़ा चम्मच शहद मिलाकर पीने से खून साफ होता है, शरीर में खून की वृद्धि होती है.
- प्याज का रस 2 चम्मच, शहद 1 चम्मच, घी चौथाई चम्मच मिलाकर सेवन करें और स्वयं शक्ति का चमत्कार देखें. ऊपर वर्णित नुस्खे स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान हैं. इन्हें अनुकूल मात्रा में उचित विधि से सुबह-रात को सेवन करना चाहिए.

बारिश के मौसम में डायरिया से रहें सावधान

बारिश के दिनों में गैस्ट्रोएंट्राइटिस होने पर डायरिया और उल्टियां होने जैसी परेशानियां हो सकती हैं। यह वायरस, बैक्टीरिया या पैरासाइट्स से होता है। इस बीमारी का मुख्य कारण पानी का संक्रमित होना है।

क्या सावधानी बरतें

- हमेशा फिल्टर्ड पानी इस्तेमाल में लाएं। घर में लगे वॉटर फिल्टर की नियमित रूप से सर्विस कराएं।
- इसका कंटेनर अंदर से बिल्कुल सूखा होना चाहिए। इसे नल के पानी से साफ करें। अगर यह अंदर से गीला होगा तो फिल्टर होकर जमा होने वाला पानी नल के पानी से मिक्स होकर संक्रमित होकर संक्रमित हो जाएगा। इसे सामान्य पानी से साफ करने के बाद आखिर में उबले या फिल्टर किए पानी से अंदर से धो लें ताकि यह जर्म्स फ्री हो जाए।
- इसके कंटेनर को नियमित रूप से धोएं। इसे 2-3 दिन के लिए यों ही रखा रहने देने से भी इसके अंदर गंदगी जमा हो जाती है।
- फिल्टर पानी को 24 घंटे के अंदर-अंदर इस्तेमाल करें। इस्तेमाल में लाने के बाद इसके कंटेनर को फिर से साफ करें।
- छोटे बच्चों को फिल्टर के पानी को उबालकर व ठंडा करके पीने के लिए देना चाहिए।
- डेढ़-दो साल के बच्चे को नहलाना भी इसी पानी से चाहिए, क्योंकि नहलाते समय पानी उनके मुंह में चला जाता है। उससे भी डायरिया हो सकता है।
- कई पैरेंट्स बच्चे को गीजर से गरम

किए पानी से यह सोचकर नहला देते हैं कि पानी गरम होने की वजह से जर्म्स फ्री हो गया है। ऐसा न करें।
- हमेशा खाना बनाने से पहले हाथ धोएं। फल-सब्जियां अच्छी तरह साफ कर इस्तेमाल करें।
- बच्चे को भी हाथ धोकर खाना खाने को कहें। छोटे बच्चे दीवारों पर हाथ लगाते हुए चलते हैं और उसी हाथ से खाना खा लेते हैं। इससे भी संक्रमण का खतरा रहता है।
- बच्चे को बाजार से कोई भी कटा फल न खाने को दें और न ही ज्यूस पीने दें। मक्खियों की वजह से संक्रमण हो सकता है।
- मां बच्चों को गर्मियों में दही, छाछ, मट्ठा आदि खूब दें। दही पाचन शक्ति बढ़ाता है और इंफेक्शन से बचाता है।
- बड़े लोगों को डायरिया हो तो वे इलाज कराने पर जल्दी ठीक हो जाते हैं। लेकिन बच्चों को अक्सर ठीक होने में वक्त लग जाता है।
- अगर बच्चे को डायरिया हो जाए तो डॉक्टर से इलाज कराएं। इसमें मुख्य रूप से डिहाइड्रेशन का खतरा रहता है।

आइए जानें रोज क्या खाएं और क्यों खाएं

सेहतमंद और तरोताजा बने रहने के लिए जरूरी है घर के हर सदस्य को पता हो खान-पान संबंधी उपयोगी टिप्स। पेश है आपके लिए कुछ विशेष जानकारियां- • सूप को भी डाइट में शामिल करना जरूरी है। कोशिश करें कि एक कप लो कैलोरी और लो सोडियम वेजिटेबल सूप एक दिन में पिएं। एक अध्ययन में पाया गया है कि दिन में 2 बार सूप पीने वाला व्यक्ति उसी कैलोरी में स्नैक्स खाने वाले व्यक्ति की तुलना में तेजी से वेट लॉस करता है

- एक मध्यम आकार के शकरकंद में लगभग 100 कैलोरी होती है। शकरकंद में कार्ब्स और बीटा-कैरोटीन होते हैं। इसके अलावा पोटेशियम व मैग्नीशियम जैसे खनिज मौजूद होते हैं। सप्ताह में 2 या 3 बार शकरकंद खाएं।

पाक्षिक पंचांग

15 से 28 सितम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
आश्विन कृष्ण 8/9 से आश्विन शुक्ल 6 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
15	सितम्बर	सोम	आश्विन कृष्ण	8/9 मातृ नवमी श्राद्ध
16	सितम्बर	मंगल	----------	10
17	सितम्बर	बुध	----------	11 इंदिरा एकादशी
18	सितम्बर	गुरु	----------	12
19	सितम्बर	शुक्र	----------	13 प्रदोष व्रत
20	सितम्बर	शनि	----------	14
21	सितम्बर	रवि	----------	30 पितृमोक्ष अमावस्या
22	सितम्बर	सोम	आश्विन शुक्ल	1 नवरात्रारंभ
23	सितम्बर	मंगल	----------	2
24	सितम्बर	बुध	----------	3
25	सितम्बर	गुरु	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
26	सितम्बर	शुक्र	----------	4
27	सितम्बर	शनि	----------	5
28	सितम्बर	रवि	----------	6

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

शक्तिमान रोटावेटर ने मेगा फ्री सर्विस कैंप का आयोजन किया

जयपुर (कृषक जगत)। देश की प्रतिष्ठित कृषि उपकरण निर्माता कम्पनी शक्तिमान रोटावेटर के आधुनिक कृषि उपकरण किसानों के लिए अधिक फायदेमंद साबित हो रहे हैं। कम्पनी द्वारा कृषि सीजन से पहले रोटावेटर की सर्विस और ग्राहक संतुष्टि के लिए मेगा फ्री सर्विस कैंप का आयोजन किया गया।

राजस्थान के पाली जिले के रानी तहसील के खिंवाड़ा गांव में तीर्थ एग्रो टेक्नोलॉजी प्रा लि के अधिकृत विक्रेता महादेव एग्रीकल्चर इंडस्ट्रीज, रानी के द्वारा आयोजित मेगा फ्री सर्विस कैंप में शक्तिमान कंपनी के राजस्थान के कस्टमर केयर मैनेजर श्री त्रिलोक सैनी, एरिया सर्विस मैनेजर श्री अंकुश मंदान और सर्विस इंजीनियर श्री धर्मराज नागर के अलावा महादेव एग्रीकल्चर इंडस्ट्रीज, रानी की ओर से डीलर श्री शंकर परमार, श्री विष्णु परमार और सर्विस टीम के सदस्य उपस्थित थे।

इस मेगा सर्विस कैंप में किसानों के रोटावेटर की फ्री लेबर चार्ज पर सर्विसिंग की गई और रोटावेटर के ब्लेड और स्पेयर पार्ट्स पर डिस्काउंट भी दिया गया। साथ ही किसानों को उपहार भी दिए गए। सर्विस कैंप के दौरान कंपनी के अधिकारियों द्वारा किसानों को आधुनिक मशीनों से अवगत कराया गया, ताकि खेती को और आसान बनाया जा सके। साथ ही किसानों को कृषि उपकरणों की निरंतर सर्विस करवाने के लाभ बताते हुए सावधानी रखने का आग्रह किया गया।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक

- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

जिलों में फसल खराबे का आकलन कर किसानों को सहायता दी जाएगी

जयपुर। संसदीय कार्य मंत्री श्री जोगाराम पटेल ने विधानसभा में कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा किसानों की हर समस्या के लिए संवेदनशील हैं। प्रदेश में अतिवृष्टि से फसलों को हुए नुकसान को देखते हुए मुख्यमंत्री द्वारा प्रत्येक जिले में गिरदावरी, विशेष गिरदावरी करवाने तथा नुकसान का आकलन करने के लिए जिला कलक्टरों को निर्देश दिये गए हैं। उन्होंने कहा कि खराबे का आकलन कर किसानों को नियमानुसार सहायता दी जाएगी।

संसदीय कार्य मंत्री प्रश्नकाल के दौरान सदस्य द्वारा इस संबंध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का राजस्व मंत्री की ओर से जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि जिलों के प्रभारी मंत्रियों, प्रभारी सचिवों और जिला कलक्टरों द्वारा फसल खराबे का आकलन किया गया है। मुख्यमंत्री महोदय ने भी इस संबंध में सभी प्रभारी मंत्रियों और सचिवों की बैठक ली है। उन्होंने कहा कि खराबे की रिपोर्ट के आधार पर सहायता राशि दी जाएगी।

इससे पहले विधायक श्री लक्ष्मण राम के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में संसदीय कार्य मंत्री ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र मेड़ता में माह जून व जुलाई, 2025 में अतिवृष्टि से फसल खराबा नहीं होने से सर्वे या गिरदावरी नही करवाई गयी। वर्तमान में गिरदावरी कार्य जारी है।

उन्होंने कहा कि गिरदावरी कार्य पूर्ण होने के पश्चात फसल खराबा की स्थिति पाई जाती है, तो आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग द्वारा एसीडीआरएफ नोर्म्स के अनुसार आदान-अनुदान वितरण की कार्यवाही की जावेगी।

पशुपालन विभाग के विभिन्न संवर्गों के 231 अधिकारी हुए पदोन्नत

जयपुर। पशुपालन विभाग के राजस्थान राज्य पशुपालन सेवा संवर्ग के वरिष्ठ पशु चिकित्साधिकारी, उप निदेशक, संयुक्त निदेशक तथा अतिरिक्त निदेशक तथा निदेशक स्तर के विभिन्न संवर्गों के कुल 231 पदों के लिए गत दिनों शासन सचिवालय में पदोन्नति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अयूब खान ने की। बैठक में शासन उप सचिव संतोष करोल, श्री दिनेश कुमार शर्मा, संयुक्त शासन सचिव, कार्मिक विभाग एवं पशुपालन विभाग के कार्यकारी निदेशक डॉ आनंद सेजरा भी उपस्थित थे। शासन सचिव पशुपालन विभाग डा. समित शर्मा ने यह जानकारी देते हुये बताया कि पदोन्नति समिति की बैठक में वर्ष 2016-17 से वर्ष 2024-25 तक विभिन्न संवर्गों के पदों पर पदोन्नति की गई है। डॉ. शर्मा ने कहा कि पदोन्नति प्रक्रिया का संचालन राज्य सरकार के नियमों एवं विभागीय पदोन्नति समिति की अनुशंसा के आधार पर किया गया है। उन्होंने कहा कि विभाग में उपनिदेशक, संयुक्त निदेशक, अतिरिक्त निदेशक, मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड तथा निदेशक पशुपालन की पदोन्नतियाँ काफी समय से लम्बित थी। विभागीय पदोन्नति के अंतर्गत पात्रता एवं वरिष्ठता के आधार पर विभिन्न श्रेणियों के अधिकारियों को उच्च पदों पर पदोन्नत किया गया है। बैठक में विभाग के निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के दोनों पदों तथा अतिरिक्त निदेशक पद पर नौ अधिकारियों को पदोन्नत किया गया। इनके अलावा सामान्य तथा विशिष्ट अनुभाग के 51 अधिकारियों को संयुक्त निदेशक के पद पर पदोन्नति दी गई। उपनिदेशक के पद पर 74 अधिकारियों तथा वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी के पद पर 95 पशु चिकित्सा अधिकारियों की पदोन्नति हुई है।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
➩ वार्षिक रु. 600/- ➩ दो वर्ष रु. 1000/-
➩ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' – प्रति सप्ताह ◻ भोपाल ◻ जयपुर ◻ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ◻◻◻◻◻◻ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222
पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

— अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें —
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

भारत में CNH का नया ट्रैक्टर प्लांट, न्यू हॉलैंड ब्रांड को मिलेगी बढ़त

नोएडा (कृषक जगत)। न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर बनाने वाली कंपनी CNH भारत में अपना चौथा ट्रैक्टर प्लांट लगाने जा रही है। कंपनी का लक्ष्य है कि अभी जो 4.5% मार्केट शेयर है, उसे बढ़ाकर दो अंकों (डबल डिजिट) तक पहुँचाया जाए। CNH भारत को अपनी वैश्विक रणनीति का केंद्र बना रही है। इसके लिए कंपनी यहां उत्पादन क्षमता बढ़ा रही है, इंजीनियरिंग टीम को और मज़बूत कर रही है और नए-नए उत्पाद लाकर बाजार में अपनी पकड़ मजबूत कर रही है।

भारत CNH के लिए सबसे तेजी से बढ़ते बाजारों में से एक है। कंपनी मजबूत सप्लाई चेन, कम लागत और कुशल मानव संसाधन का उपयोग कर उत्पादन बढ़ा रही है, भारत को टेक्नोलॉजी व रिसर्च हब बना रही है और किसानों की ज़रूरतों के हिसाब से नए उत्पाद ला रही है। 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' विजन के तहत ग्रेटर नोएडा प्लांट से भारत का पहला कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर लॉन्च किया गया है और यहाँ बने उत्पाद 80 से अधिक देशों में निर्यात हो रहे हैं।

CNH के सीईओ श्री गेरिट मार्क्स ने कहा कि भारत अब सिर्फ एक बाजार नहीं, बल्कि कंपनी की वैश्विक विकास रणनीति का अहम हिस्सा है। मेड-इन-इंडिया कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर, रिसर्च और सप्लाई चेन हब के रूप में भारत भविष्य की दिशा तय कर रहा है। यहाँ की प्रतिभा और लागत लाभ कंपनी को नवाचार, विस्तार और बेहतर मूल्य देने में मदद करते हैं। CNH भारत में अपनी उपस्थिति और मजबूत करेगी तथा कृषि और निर्माण क्षेत्र के लिए उन्नत समाधान उपलब्ध कराती रहेगी। गेरिट ने बताया कि CNH भारत में चौथा ट्रैक्टर प्लांट लगाने की योजना बना रही है। कंपनी की वार्षिक उत्पादन क्षमता 70,000 यूनिट है, जिसमें से 60,000 का उपयोग हो रहा है। 2024-25 में 51,000 ट्रैक्टर बेचे गए, जिनमें 37,000 भारत में और 14,000 निर्यात किए गए। इन निर्यातों में 30% अमेरिका और 70% यूरोप व अन्य बाज़ारों में गया। उन्होंने भरोसा जताया कि अमेरिका में टैरिफ की बाधा जल्द ही दूर हो जाएगी।

CNH इंडिया के प्रेसिडेंट और एमडी श्री नरिंदर मित्तल ने कहा कि कंपनी भारत में बड़ी संभावनाएं देख रही है और उसके निवेश 'मेक इन इंडिया' पहल को मज़बूत करते हुए देश को निर्माण, टेक्नोलॉजी और सोर्सिंग में अग्रणी बना रहे हैं। कंपनी रोजगार सृजन, खेती में मशीनीकरण और किसानों की उत्पादकता व आय बढ़ाने पर काम कर रही है। मित्तल ने बताया कि CNH न्यू हॉलैंड ब्रांड के साथ 35-40 एचपी और 49 एचपी ट्रैक्टर रेंज में विस्तार कर रही है और उम्मीद है कि इस साल ट्रैक्टर उद्योग में 5% की वृद्धि होगी तथा अगले पाँच सालों में कंपनी का मार्केट शेयर 4.5% से बढ़कर डबल डिजिट तक पहुँच जाएगा।

गुरुग्राम स्थित इंडिया टेक्नोलॉजी सेंटर, जो CNH का सबसे बड़ा वैश्विक टेक्नोलॉजी हब बनने जा रहा है, दुनिया भर के लिए नए उत्पाद विकसित कर रहा है। यहाँ 700 से अधिक इंजीनियर काम कर रहे हैं और केंद्र में एडवांस मशीनरी और टूल्स मौजूद हैं। वर्तमान में CNH के ग्रेटर नोएडा, पुणे और पिथमपुर प्लांट्स में ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, बेलर, रेक, इंजन, कम्पेक्टर, लोडर बैकहो और एक्स्केवेटर बनाए जाते हैं।

महिंद्रा अर्जुन ट्रैक्टर सीरीज़ ने पूरे किए 25 वर्ष

मुंबई (कृषक जगत)। महिंद्रा ट्रैक्टर्स, जो दुनिया का सबसे बड़ा ट्रैक्टर निर्माता है, ने अपनी प्रतिष्ठित अर्जुन सीरीज़ के 25 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया। इस अवसर पर कंपनी ने अर्जुन सीरीज़ पर 6 साल की मानक वारंटी देने की घोषणा की।

साल 2000 में लॉन्च हुई अर्जुन सीरीज़ आज 60 HP तक की पावर रेंज में 2WD और 4WD कॉन्फ़िगरेशन के साथ उपलब्ध है। महिंद्रा की उन्नत mDI और CRDe इंजन टेक्नोलॉजी, डुअल क्लच, कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन, हाई टॉर्क और उन्नत हाइड्रोलिक्स इसे खेती और हैवी-ड्यूटी ढुलाई कार्यों के लिए किसानों की पहली पसंद बनाते हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. के फार्म इक्विपमेंट बिज़नेस के अध्यक्ष श्री विजय नाकरा ने कहा, 'हमें अर्जुन सीरीज़ पर गर्व है जिसने 25 वर्षों में पूरे भारत के 2.5 लाख से अधिक किसानों का विश्वास जीता है। पंजाब से तमिलनाडु तक, इसने खेती और ढुलाई दोनों में किसानों की उत्पादकता बढ़ाई है।

वर्तमान में अर्जुन सीरीज़ में पाँच मॉडल उपलब्ध हैं, जिन्हें देशभर में महिंद्रा के डीलर नेटवर्क और आकर्षक फाइनेंस योजनाओं के साथ खरीदा जा सकता है।

मिट्टी ,फसल की सेहत सुधारने हुई साझेदारी

आईसीएल और बायोप्राइम मिलकर भारत में लाएँगे 'बायोनेक्सस' समाधान

पुणे (कृषक जगत)। मिट्टी और फसल स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए आईसीएल ने बायोप्राइम के साथ दीर्घकालिक साझेदारी की है। इस साझेदारी के तहत बायोप्राइम के बायोनेक्सस प्लेटफ़ॉर्म पर आधारित नवीन कृषि समाधान अब भारतीय किसानों तक पहुँचेंगे। जानकारी के अनुसार, यह बायोप्राइम की बायोनेक्सस लाइब्रेरी के लिए पहली साझेदारी है। इस लाइब्रेरी में 18,000 से अधिक अनूठे माइक्रोबियल स्ट्रेन्स मौजूद हैं। प्रत्येक स्ट्रेन की विशेषताएँ अलग-अलग हैं और इन्हें विशेष रूप से मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने व फसलों की सेहत बढ़ाने के लिए विकसित किया गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस पहल से भारत में सतत कृषि को बढ़ावा मिलेगा और किसानों को उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

भारत में फॉस्फोरस की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यहां अधिकांश फॉस्फोरस लोहे (Fe) और एल्युमिनियम (Al) से बंधकर मिट्टी में फँस जाता है। दूसरी जगहों पर यह समस्या कैल्शियम (Ca) के साथ देखने को मिलती है। मौजूदा समाधान इन Fe/Al बांधों से फॉस्फोरस को मुक्त नहीं कर पाते, जिससे फॉस्फोरस उपयोग दक्षता (PUE) लगातार घटती जा रही है।

पोषक तत्व दक्षता पर फोकस

साझेदारी की शुरुआत उन उत्पादों से होगी जो फसलों में पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता (NUE) बढ़ाएंगे। पहले चरण में ध्यान फॉस्फोरस (P) और जिंक (Zn) पर रहेगा। ये दोनों पोषक तत्व भारतीय किसानों के लिए महंगे और सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। भारत की विश्व में कुल फॉस्फेट उपभोग की लगभग 12% हिस्सेदारी है, लेकिन इसके लिए आयात पर काफी निर्भर रहता है। स्थिति यह है कि मिट्टी की परिस्थितियों के कारण किसानों द्वारा डाला गया करीब 85% फॉस्फोरस बेकार चला जाता है। इसी तरह, देश की लगभग 48% भूमि जिंक की कमी से जूझ रही हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि खासकर दक्षिणी राज्यों में यह कमी फसल उत्पादन की घटती दक्षता के कारण 63% तक पहुंच सकती है। भारत में फॉस्फोरस की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यहां अधिकांश फॉस्फोरस लौह तत्व (Fe) और एल्युमिनियम (Al) से बंधकर मिट्टी में ही रह जाता है। दूसरी जगहों पर यह समस्या कैल्शियम (Ca) के साथ देखने को मिलती है। मौजूदा समाधान इन तत्वों से फॉस्फोरस को मुक्त नहीं कर पाते, जिससे फॉस्फोरस उपयोग दक्षता (PUE) लगातार घटती जा रही है।

फॉस्फोरस और जिंक पर सीधा असर दिखाएँगे नए स्ट्रेन्स

बायोनेक्सस प्लेटफ़ॉर्म ने कुछ विशेष माइक्रोबियल स्ट्रेन्स की पहचान की है, जो मिट्टी में लोहे (Fe) और एल्युमिनियम (Al) से बंधे फॉस्फोरस को सक्रिय कर सकते हैं। शुरुआती नतीजों में इन स्ट्रेन्स ने फॉस्फोरस उपयोग दक्षता 2 से 3 गुना तक बढ़ाने की क्षमता दिखाई है। इसी तरह, प्लेटफ़ॉर्म ने ऐसे स्ट्रेन्स भी उपलब्ध कराए हैं जो मिट्टी में जिंक को 65-70% तक घुलनशील बना सकते हैं। इससे पौधों को जिंक आसानी से मिल पाएगा और उनकी वृद्धि बेहतर होगी।

बायोप्राइम एग्रीसॉल्यूशंस की सह-संस्थापक और सीईओ रेणुका करंदीकर ने कहा-'हमारा मिशन हमेशा से कृषि की सबसे कठिन चुनौतियों का समाधान करने के लिए जैविक शक्ति का उपयोग करना रहा है। आईसीएल के साथ यह साझेदारी एक रणनीतिक कदम है, जो हमें भारत के किसानों तक 'बायोनेक्सस प्लेटफ़ॉर्म' पहुँचाने में मदद करेगी। आईसीएल की विशेषज्ञता और वितरण नेटवर्क इस दिशा में अहम भूमिका निभाएँगे।

आईसीएल ग्रोइंग सॉल्यूशन्स इंडिया के कंट्री लीड श्री अनंत कुलकर्णी ने कहा - 'आईसीएल भारत में टिकाऊ कृषि को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम बायोफर्टिलाइज़र और अनुसंधान-आधारित WSF पोर्टफोलियो के माध्यम से बायोस्टिमुलेंट्स को फसल योजनाओं में शामिल कर रहे हैं। इससे किसानों की पैदावार और मुनाफा दोनों बढ़ेंगे। हमें विश्वास है कि बायोफर्टिलाइज़र भविष्य की खेती में अहम भूमिका निभाएँगे और देश की खाद्य सुरक्षा और विकास को मजबूत करेंगे।'

पोषक तत्व दक्षता पर रहेगा शुरुआती फोकस

साझेदारी की शुरुआत उन उत्पादों से होगी जो फसलों में पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता (NUE) बढ़ाएँगे। पहले चरण में ध्यान फॉस्फोरस (P) और जिंक (Zn) पर रहेगा। ये दोनों पोषक तत्व भारतीय किसानों के लिए महंगे और सीमित उपलब्ध हैं।

भारत दुनिया के कुल फॉस्फेट उपभोग का लगभग 12% हिस्सा है, लेकिन इसके लिए आयात पर काफी निर्भर रहता है। स्थिति यह है कि मिट्टी की परिस्थितियों के कारण किसानों द्वारा डाला गया करीब 85% फॉस्फोरस बेकार चला जाता है। इसी तरह, देश की लगभग 48% मिट्टियाँ जिंक की कमी से जूझ रही हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह कमी घटती उपजाकुशलता के कारण 63% तक पहुँच सकती है, खासकर दक्षिणी राज्यों में।

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का दूसरा चरण

रबी फसल के लिए देशभर में 3 से 18 अक्टूबर तक चलेगा अभियान

15-16 सितंबर को दिल्ली में होगा दो दिवसीय राष्ट्रीय रबी सम्मेलन

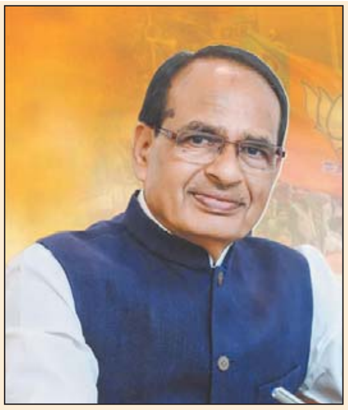

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के पहले चरण की अपार सफलता के बाद केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में अभियान के दूसरे चरण की शुरुआत होने जा रही है। पिछली बार खरीफ फसल के लिए अभियान शुरू हुआ था और अब रबी फसल को लेकर देशभर के कृषि वैज्ञानिक इस अभियान के जरिए गांव-गांव जाकर किसानों से मिलेंगे, आवश्यक जानकारी देंगे, उनकी समस्याएं सुनेंगे और प्रधानमंत्री के 'लैब टू लैंड' मंत्र को साकार करने में भूमिका निभाएंगे। इसी क्रम में 15 सितंबर से नई दिल्ली में दो दिवसीय 'राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन-रबी अभियान 2025' पूसा में आयोजित हो रहा है। रबी फसलों के लिए दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन देशभर के कृषि विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, नीति-निर्धारकों एवं राज्य सरकारों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों के लिए एक साझा मंच प्रदान करेगा, जहाँ रबी 2025-26 की बुवाई सीज़न से संबंधित तैयारियों, उत्पादन लक्ष्यों और रणनीतियों पर गहन चर्चा होगी। सम्मेलन की अध्यक्षता केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे।

इस अवसर पर अनेक राज्यों के कृषि मंत्री, केंद्रीय कृषि सचिव, आईसीएआर के महानिदेशक सहित अन्य संबंधित केंद्रीय मंत्रालयों तथा राज्यों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होंगे। केंद्रीय कृषि मंत्री के निर्देश पर पहली बार रबी सम्मेलन दो दिन का हो रहा है जिसमें कृषि से संबंधित चुनौतियां तथा रबी मौसम की फसलों के लिए किसानों को लाभ पहुंचाने की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के विषयों पर चर्चा की जाएगी।

केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह के निर्देश पर पहली बार रबी सम्मेलन 2 दिन का, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक भी होंगे शामिल

16 सितंबर को सभी राज्यों के कृषि मंत्री एवं केंद्रीय कृषि मंत्री व राज्य मंत्री विस्तृत चर्चा करेंगे, जिसमें नवीनतम तकनीक एवं बीजों को किसानों तक किस तरह प्रभावी तरीके से पहुंचाया जाए, इसके लिए गहन चिंतन एवं समीक्षा की जाएगी। सभी राज्यों के पदाधिकारी अपनी टीम के साथ इसमें भाग लेंगे , पहली बार इसमें कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों को भी आमंत्रित किया गया है, जो क्षेत्रीय अनुभव एवं चुनौतियों को साझा करेंगे तथा आगे की रणनीति तय करेंगे। इनमें विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएंगी तथा खुली चर्चा के माध्यम से व्यवहारिक समाधान सामने लाए जाएंगे।

सम्मेलन में विभिन्न राज्यों की सफलताओं और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा किया जाएगा ताकि उन्हें अन्य राज्यों में भी लागू किया जा सके। साथ ही, मौसम पूर्वानुमान, उर्वरक प्रबंधन, कृषि अनुसंधान और तकनीकी हस्तक्षेप से जुड़े विषयों पर भी विशेषज्ञ अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। यह सम्मेलन न केवल रबी 2025-26 सीज़न की कार्ययोजना और उत्पादन रणनीति को दिशा देगा, बल्कि यह किसानों की आय वृद्धि, टिकाऊ कृषि प्रणाली और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। केंद्र सरकार लगातार किसानों की समृद्धि के लिए कदम उठा रही है।